रोहीड़ै रा फूल

डा. मनोहर शर्मा

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)

बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक—
मानद मन्त्री,
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर

पलो संस्करण—११०० (सन् १९७३)

मोल—रु ५.७५

मुद्रक—
माहेश्वरी प्रिंटिंग प्रेस
बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशकीय

राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (अकादमी) रै निर्माण र उद्देश्यां माय सू एक खास उद्देश्य है—आछै राजस्थानी साहित्य रो प्रकासण। सगम रो हाल पैला बरस है अर सरूपात रै काम जमावण म भी खासा बगत लागग्यो। इण कारण जितो बगत हाथ म रयो उण म कोसीस करीजी क आछा लिखारा री श्रेष्ठ कृतिया मगाईज अर छपाईज।

डा मनोहर शर्मा शोध-विद्वान रै रूप म तो ओळखीज है ई पण आधुनिक गद्य-साहित्य मे भी आपरो योगदान रैयो है। आपरो कथा सग्रह 'कन्यादान' अर एकाकी-सग्रह 'नैणसी रो साको' तो अकादमी सू छप ई चुक्या है, अब आपरै सामनै 'राहीडै रा फूल' पुस्तक मे डा शर्माजी रै व्यग्यात्मक निबधा रा सग्रह है जिको राजस्थानी खातर एक नवी चीज है। भरोसो है राजस्थानी पाठक डा शर्माजी र इण सग्रह न चाव सू बाचसी अर इण पुस्तक बाबत आपर विचारा री जाणकारी कार्यालय न देसी।

श्रीलाल नथमलजी जोशी
मानद मत्री
राजस्थानी भाषा साहित्य सगम (अकादमी)
बीकानेर (राजस्थान)

निवेदन

एक बार मित्र मडळी म चरचा चाली क राजस्थानी भाषा न जनप्रिय बणावणसारू इसी चीजा लिखी जावणी चाईज जिकी एक साथ ई देस री वतमान दसा सू सीधो सम्बन्ध राख अर रोचक भी हुवं। आ बात म्हार मन म भली भात ढूकी अर छोटा छोटा व्यग्यात्मक लेख लिखणा चालू करया गया। राजस्थानी-प्रेमिया आ निबधा न पसद करया अर ओ क्रम जारी रयो। अब ऐ निबध 'रोहीड रा फूल' नाव सू पुस्तक रूप म प्रकासित करया गया है। बस, म्हारो तो इतरो ही ई निवेदन है।

बसत पचमी, सवत २०२६

मनोहर शर्मा

राजस्थानी भाषा-साहित्य रा अनन्य उपासक
श्रीमान पं. मोतीलालजी मिश्र नैं
घणै मान समर्पित

टीप

रोहीड़ै रा फूल

मारग र खेत री टीबी पर एक बडा सो रोहीडो खड्यो हो, जाण गेही रो राजा हुव । पण खेत रो धणी तो चौधरी हा । चौधरी रोहीड नै कटवा लिया अर आप री नु ई गुवाडी रा चौखट किंवाड करवा लिया ।

फर मी नोग वै खेत नै गहीडहाळा खेत ई कवता, कारण नड सी एक नीमहाळा खेत हो अर नीम खेत म अब भी बेरघुमर खड्यो हो । नीम न खेतहाळा कानी कटवाया अर राहीडा आपरी धरती पर सू उठगो । हा, रोहीडो आपरा नाव जरूर छाडगा । बस, इतरो सो ई सतोस रयो ।

राहीडो आपरी रत म फूलतो ता फूला ई फूला स लद ज्यावतो, जाण सारो बिरछ पत्ता रा न हुयर फूला रो ई हुव । लाल पीळा फूल ई फूल निजर आवता । धाेरै री धरती भी फूला सू छाई रवती ।

चौधरी आपर खेत रा राहीडो कटवायर आपरी गरज पूरी करी पण मन आवता जावता बो बिरछ भोत घणा सुरगो लागतो अर मै टोर बाधर राहीड कानी देखबो ई करता ।

एक दिन मै खेत र धणी नै पूछ्यो, अर चौधरी, रोहीडा क्यू कटवा लिया ? तेर खेत रा रूप इ बिगडगो । दग बावळा, फूला री रुत मे राहीडो कितरो सुरगा लागता ! अब तर खत म बा रगत कठ ? और घणा ई बडा बडा खेजडा खड या है । ज लकडी री गरज ही तो अ जाट कटवा लेवतो । रोहीडो करवायर के समझदारी करी ?'

चौधरी मुळक र उत्तर दियो, 'दीखत का फळ ऊजळा, रोहीड का फूल । थार रूप म के पड यो है ? रूप री रीव अर करम री खाव । रोहीड रै फूल म रग घणा इ, पण सारम बिना ये फूल घास सू भी गया-बीत्या है ।'

राहीड़ री लकडी एक चीज हुव, न बीभ अर न छीज। गुवाड़ी रा गोगट किवाड ऊमर सुध री चीज है। रोहीडो गुण भाया, वो महला कोनी गयो। अर जितरा अ खेजड़ा खड़चा है अ तो सालूना धन है। पछ खेजड़ा क्या वटवाया जाव ?'

चौधरी सार बात जाण हा—गुण री पूजा है रूप री कोनी। चौधरी आपर खेत म रोहीडा होता थका, जाट क्यू वटाव हा ? प्रकृति राहीड र फूला म सौरम कोनी देई पण लकडी मे गुण भर दिया। चौधरी कार फूला मू राजी हुवणिया कोनी हो, बो फळ चाव हो। आखर आपर राहीड रा फळ ल लियो।

कई कूवा रो ऊपरलो सिणगार घणा ई चाखा हुव—वडा बडा मरवा, चौडा चौपडा अर च्यारू कूटा चौपडा पर छतरी। दूर सू द अ कूवा दीप। पण न कदे काई वा पर चढ अर न अ कदे चालना इ सुण। ऊपरला साज सुरगो पण मायलो पाणी खिरावला। पछ वाजा भला ई अ कूवा, आखर अ कूवा कानी, अ दरडा है। राहीड रा ऊपरलो साज सुरगा पण मायला गुण तीखा घणा। हा, फूला म सारम कोनी, ता पछ सुरग फूला खातर राहाड न कुण पाळ ?

मिनख भात भात रा माडणा, कारणी अर चित्राम त्यार कर। वान बल-बूटा अर फूल पत्तिया सू सजाव, आप री नुई-नुई कल्पना रा वभव दरसाव। वठ रूप है अर रग भी है। पत्थर अर काठ म जाण सावला फूल द खिल उठ्या हुव। पण सारम कोनी ता के बात ? कारीगर ऊपरल दिखाव सू इ सतास मान। आखर रूप अर रग रा लगाव स्वभावज है। वळी रा पुजारी रूप री उपासना ता करता इ आया है। पछ भी राहीड रा फूल रेल मे गळ। काइ बा न बीण र माळा कानी गूथ अर सिणगार कानी कर।

राहीडा इसा सुरगो हुयर भी राही रा रूख दरया कद बाग बगीचा म कानी आ पाया। बागवान आम अमरुद लगाया गुलाब चमला लगाया पण कद राहीडा खड या कोनी करया। ई तपसी न आप र तप रा फळ कोनी मिल्या। बडा हुयर भी राहीडा बड बिरछा रा पगत म कानी बठ पाया।

हजारां बरसां सू रोहीडो मन मैं धीरज धारणा करयां गडीक हो—
'उत्पत्स्यते च मम कोपि समानधर्मा कालोह्यम निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ।'

भारत मे अरबी सभ्यता आई । पण कई बातां मे आ सभ्यता नुई हुयर भी भारत री विचारधारा सू मेळ खाव ही । नुई सभ्यता कोरै रूप री उपासक कोनी ही, गुण री गाहक भी ही । मुगलां न बाग-बगीचा रो चाव घणो हो । ब देस रा धणी बणर भांत भांत रा बाग लगाया अर आपरो चाव पूरो करयो । पण ब रूप र साथ गुण भी देख्यो अर बागां म रोहीडा कोनी रोप्या गुलाब लगाया । मूळ म कोई फरक कोनी आयो । भारत गुलाबी देस बणर दीप्या ।

पछ भारत मे सात समदर पार सू नया पारखी आया अर समय पायर ये छळ बळ सू देस रा धणी बण बठ्या । 'राजा कालस्य कारणम् ।' भारत मे नुई सभ्यता विस्तार पायो । अग्रेजां रा जीवण देस मे नमून री चीज मान्यो गयो ।

अग्रेज फूलां रा इसा सोखीन क बाग-बगीचा री तो बात ई कै, घर न भी फूलां सू सिणगार । अग्रेजां री जलमभोम मे आपरा फूल घणा ई है । उण फूलां मे रंग है, सोरम कोनी । पण किसा भी हुवो, आगर है तो अग्रेजी फूल । भारत मे जद अग्रेजी कुत्ता रो ई सनमान हुयो तो अग्रेजी फूलां रो तो हुवतो ई ।

भारत मे बगला बण्या अर बगला मे गमला री सजावट हुई । गमला मे नये नये नावां रा फूल खिल्या । पुराणा देसी फूल मालती मोगरो, मल्लिका जूही, केवडो, गुलाब बिना मन रा पावणा बण्या । जद खोटा पीसा चालण लाग ज्याव तो खरा पीसा आप ई ल्हुक ज्याव । गमला र फूलां रो राज देखर सोरमहाळा पुराणा फूल आपो समट लागा ।

जरूर जरूर रोहीडो अ समाचार सुणर राजी हुयो हुसी अर और भी घणो फूल्यो हुसी—आखर म्हार गुण नै भी इसी लोग पिछाण्यो तो सरी ।

आज भारत मे घ्यारू मानी नये फूलां रा ठाठ है । अग्रज चल्या गया पण आपरा फूल अ० रोपगा । आज बिलायती छाप-हाळा रोहीडै रा फूल देख

में सगळा छाया पड़ग्या है। साचू राज में देखो, भावूं समाज में, सगळै कागलो आडम्बर पुजरयो है। रोहीड़ री तपस्या फळगी। रग री माया सगळा ने रग में कर लिया।

ढळती फिरती छाया है। आज गुलाब रो सनमान कानी, रोहीड़ रै फूलां रो आदर है। गुलाब हारग्या अर रोहीड़ रा फूल जीतग्या। पण मानस बिना कारो रूपरंग के दिना टिकसी ? पानिम कस्याण अ नाम सिरवा वाली रा रिपिया बगैर के दिना चालसी ? ई सवाल रा जवाब भविष्य देसी।

रुत आयाँ भाड़ी बोरियाँ सूं लद जावती अर मगाँ बोरिया लागता। बारिया थोड़ा सा पाकण लागता अर गळी रा टाबरा री ध ड पड़ती। टाबर भाड़ी पर चढ कोनी पावता पण भाठा सू बोरिया तळे गेरण री पूरी चेस्टा करता। भाठां सू काचा अर पाका घणा ई बोरिया भड़ भड़ पड़ता। काचा बोर धरती म रुळता अर पाका टाबरा रै मूंड म जावता। एक एक बोर खातर टाबर लड़ता भी भाग घणा। फर भी ई भाड़ी रो नाह छूटता कोनी।

बखत मिर टाबरा री टोळी आपर गल नागती तो सून देखर पखेरवा री डार आ जमती। सूवा आवता बुलबुला आवती। पण पखेरू मिनख सूं घणा स्याणा। अ पाक बोरा पर ई चाच चलावता अर काच बोरा न मारा साबता लाग्या रवण देवता। पण अ खावता थोड़ा अर चाख चाखर गेरता घणा। अ भाड़ी र तळ टाच मारयोड़ बोरिया रा बिछावणा कर देवता। मोजमस्ती री दुनिया मे आपर अ बोलता भी घणा मीठा। इण भात भाड़ी पर पछिया र रागरग री गोठ हुवती।

बोरडी चुपचाप खड़ी रवती। बा तठ स न टाबरा न धमकायर काढती अर न ऊपर सू जिनावरा न उडावती। उण न ता आपरा फळ देवणा ई हा। पछ काई ढग सू खावा भावू बढग सू रुळावो। ब जाण बा री चीज जाग।

इसी सुमत भारत र टाबरा मे कठ क ब सरबात री साख री रुखाळी कर अर उण रो पूरो लाभ लेव ? बोरडी टाबरा र मोह सू घणी ई पावसती अर फळती पण उण री स.तूनी साख रा चोथो बाटो भी मिनख र मूंड मे काँई जा पावता। घणाखरी साख माटी म मिलती अर अहळी जावती।

' बरबाटी री चिन्ता कुण कर ? अठ तो मीर री होळी फूकण री मानी गई है। गतन्ति मगळा र काम आवण आळी धरमसाळ री भीता न देखो किमीक माफ सुथरी मिल ! बोरडी री लाकडी मजबूत घणी हुव। पोल देखर लोग बोरडी री डाळिया काटणी सरु कर दीनी अर आपर कसिये-कुहाडा रा बसा कराव लागा। बिचारी बोरडी रो विस्तार घटतो गयो अर आखर बा एक ठूंठ सी खडी रयगी। एक दिन बिना धणी धोरी रो ओ ठूंठ भी कोई काट लियो–हम पीया हमारा ऊट पीया अब माव् कूवा ढह पडो।'

भारत री आजादी मे भा आज बारडी आळी इ बीत रयी है। आजादी न रुखाट काई कोनी अर इ न लूटबा म मगळा लागरया है। इ री माख रो

लाभ ता सगळा लेवणा चाव पग ~ म सोचें काइ कानी । दिन दिन आजादी री बोरडी दूबळी पडती जाव है । ऊपर सू पगरवा री डार लूम रयी ह अर तळ भारतमाता रा बटा मार मार भाठा काचा-पाका सगळा बार भाडग म लागरचा है । ता पछ आ आजादी री बारडी कितरा दिन खडी रवसी ?

आज दस र आग एक इ समस्या ह अर इ रा जवानी समाधान करया काम कोनी चाल । आ समस्या आव दम री जि दगी मू जुडयाडी है अर जिन्दगी माय ई इण रो साचला समाधान ह– खेती धणिया सती ।'

8

मुसीजी रो सुपनो

स्याळ री रात ही । दस बज्या हा । मुसीजी रिजाई ओढ्यां छापो बांच हा । वां न छापै रा सारा समाचार मूं ... हा । आजादी री सारी मुसीजी न पसन मिला, जद मूं व घणां ई रवता । घर रा भार वां रा बेटा सभाळ राख्यो हो । अर मुसीजी नामी सुभाव रा हा काना, पछ चुनाव म मेचळ क्यूं खावता ? पार्टी बाचण म अर छापा न्याराम म वां रो वगत करता । व धीरज अर सतोस सूं पाछला दिन काढ हा ।

हा तो मुसीजी छापो देख हा जद बा र मुख पर गभीरता हा । बीच-बीच म मुसीजी नामी सास भी छोड हा । व कद-कद छापो बन्द कर हा अर पछ पा रा उठाय लव हा । आखर मुसीजी पूरो छापो दखर चुपचाप बठग्या, जाण पुराणी बाता न याद करता हुव । अर आज रा समाचार तो सारा छाप म हा ई ।

मुसीजी मन ई मन म आजादी सूं पला र भारत री आज र भारत सूं तुलना करी । परतत्र भारत अर आजाद भारत री मान भात री तसबीरां बा र अ तरमण र आग चित्रपट र रूप म फिरी । व फेरू एक नामी सास छोडी अर पिलग पर आडा हुयग्या । पण चित्त म चा काी । काजीजी दूबळा क्यूं क परोय दुख सूं । मुसीजी आप सुखी हा पण देस री दसा बा न चिता म गर राख्या हा । छापा बाचणिय लोगा र आ रोग तो लाग इ जाव किणी र थोडो अर किणी र घणो । मुसीजी र आ रोग वडो हो ।

आखर नींद माता आई अर बाळक मुसी न आप री गोदा म लयर ऊपर पहलो गेर लियो । पछ नींद माता असमान मे उडी अर बाळक मुसी न सुपना र लोक म लेयगी । अठ टाबर न नींदमाता फिरवा री पूरी छूट दीनी । अर बाळक तो सुभाव सूं ई चचळ हुव, मुसीजी नुइ दुनिया रा तमासो देखबा न चाल्या ।

आगै सी एक जगा भोत घणा लोगा री भीड़ मुसीजी रै निजर पडी। इतरा मोटधार एक जगा भेळा क्यू हुय रैया है ? मुसीजी रै कुतूहळ हुयो अर ब नेड सी जा पूग्या। पण स्याणा हा, मुसीजी भीड भेळा नी हुया अर दूर खडया ई सारो तमासो देख्यो।

जल्दी ई मुसीजी री समझ माय पूरी बात आयगी कै आ ता मोटधारा री दौड हुय रयी है, जिया घोडा री भी तो दौड हुया कर है। इसी दौड मुसीजी घणी इ देखी ही पण आ दौड न्यारी ई ही। सकडो सा रस्तो हो। दोनू कानी मकान अर दुकाना री लामी कतार ही। आ दौड मैदान म न हुयर बजार मे हुयरी ही। दौड सातर बजार बद कर मेल्यो हो अथवा लोग डरता आप ई सडक छोड दीनी ही।

सडक इतरी सी चोडी ही कै एक सीध मे बीस पच्चीस नेडा भागणिया खडया हुय सक। पण अठ तो हजारा भागणिया हा अर ब दूर दूर सू आया हा। दो अफसर सडक र बीच मे मोटी डोरी ताण राखी ही अर उण र एक कानी सारी भीड भेळी ही। आगलो नाको क्यु दूर हो पण दीख हा। बठ भी दो अफसर डोरी पकडया खडया हा। बा र गल नै हार-जीत रो निणय देखणिय लोगा री एक दूसरी भीड खडी ही। मुसीजी एक ऊची सी दुकान दखर आगल नाक खडया हुयग्या, जिणसू सारो तमासो भली भात देख्यो जा सक।

आखर दौड सरू हुई—एक, दो, तीन। सारी भीड सकडी सडक पर एक साग तीन' री बाली सुणता इ सपाट भागी। हे राम, आ के दौड ? दौड सरू हुवता ई इसी धकापल माची क विचारा आधाक भागणिया तो सडक पर पडगा अर चिथगा। किणी रा हाथ टूटचो अर किणी रो पग। कई बेहोस हुयग्या अर कई जाण लाट मे गाह्या गया। भागणिया एक ई विचार कोनी करचो क पगा तळ मिनख शरीर है अर ब लाथ ज्यू पडया सिसक है। आप री जीत री बाजी कुण छाड ? कई जणा पडया, जद ई तो ब आग बढया। आ तो बा री पली जीत ही। मार्गणिया मोटधार पडचोड जुवाना कानी कोनी देख्या ता तमासू लोग भी बा र क्यु ई आडा कोनी आया—जे इतरो ई दम हो ता ब दोड म आया इ क्यू ?

भागणिया री भीड आग बधु कम हुई पण फेर भी काइ कम हुई ? सडक म तो इतरा भी कोनी समाया । पछ धक्कम धक्की हुई । जिण री काया म बळ हो बो कमजोर न देखर धक्को मारचो अर बिचार रा हाड तोड गेर्‌या । इ जीत रा मजा भी कम मत समझो । जिका मांगतोड र शरीर म बळ कोना हो तो वा आग नीसरत मा री र अटगी लगाइ अर उण र मूड रा पोळी रा किवाड खाल दिया । इण भात आधी दूर जावता भीड और कम हुइ पण मोटचार दडाछट भाग्या इ जाव हा ।

मुसीजी दरया क आ के दौड ? अठ एक इ नियम अर कायदा कोना । अठ ता बस एक ई नियम ह– जिण र हाथा डाल म, उण रा दिन दरियाव । अर दूजो कायदा अटगी हाळा भी ह– बळ सू काना हुव, जिका काम कर सूं हुय ज्याव ।

यू करता थाडा सा भागणिया आगल नाक र नड सी पूग्या । अ ला छटचाडा जुवान हा । देखण म भी लाम्बा चौडा अर भरवा हा । पण अत म इनाम तो पहली दूसरी अर तीसरी, अ तीन ई ही । इ तीन इनामा खातर य तीसा जुवान खमग्या हा ।

नाका नेडा देखर जुवाना म भान घणा जाम आया । व बुगी तरिया हाफ उठचा हा अर वा री छाती धडक हा पण जान रा लाम लार सू कारणा मार हा अर व भाग्या जाव हा । आखर आगली डागी एकदम इ नेना आयगा पण व डारा पकड पाया द काना अर पना इ तानू इनामा री आर सू घापणा हुयगी । भागणिया हक्काबक्का सा डागी काना निराशा रा निजर गगी । बा र मूडा म झागला आयगा अर विचारा पडगा । लागा रा भाट म क्यु भी बरा कानी नाग्यो क वा रो पत्र काइ हुया ।

गाड रा पहला इनाम जाता एक पागडा दूजा हाथ आइ एक फूल र अर ताजो मिली एक खाड न । नाग पागळिय न आपरा पाठ पर लाद्या अर दूनिय न गाव पर मल्या । खाटिया तागर नम्बर पर जात्या हा । वा रा गात म भरचा टचरगा ट्वता फिर हा । तानु वा र गळा म फूला रा माळा लटक हो । जीतणिया रा जार-जार सू जजकार हुव हा । वा रा भाट आनद म उछळ हा ।

मुंसीजी अचरज में भरया दौड़ रो सारो तमासो देख्यो। इं रोळै सूं बां री आंख खुलगी। दिन उगण में आयग्यो हो। मुंसीजी खाट छोडर उठगा अर पाछा साथा वानी। बां नै असली भेद मिलग्यो। गावा सीमण री सूई रो भेद भी तो एक सुपन में ई खुल्यो हो। कारीगर रै माथ में सुपन में एक देव कील ठोकी अर बा जाएगा कै सूई रै भी सिर पर ई बंभ काढणा चाहिजे। आ ई मुंसीजी मे हुई। सुपनां बां री सारी सका मेट दीनी। बै जाणगा कै आज रै भारत री चाफेरी गिरावट रो असली कारण कै है? लायक मोटयार हार मानर बैठगा अर लूंना पागल दौड में जातर सगळै पदां पर जमगा। नीति वचन है—जठै पूजनीक लोगां रा सनमान न हुयर हळकै आदमियां रो आदर हुवै, बठै काळ पड़ै, मौत हुवै अर भय फैलै।'

गादड-पट्टो

भवरो सात बरस रो हो पण पोथी बाचणी मज म सीख लीनी। बाता रा इसो चाव क रात न नेम सू बाबोसा कन बात सुण अर दिन मे भी बाता रो पारी न लिया ई बठ्यो रव। एक रात बाबोसा गादड पट्टे री बात सुणाई—

बीड मे एक गादडो घणो स्याणो हो। एक बर बो रात न मोको देखर गाव कानी आया। कुत्ता रो डर घणो पण गादडो भी अक्कल मे कम कोनी। एक बाड तळ एक डण्डो अर कागद रो टुकडो पडया हा। गादडो य दोनू चीजा उठाय लीनी अर पाछा ई बीड म आयग्या।

कागद र टुकड न गादडो डड सू बाध लियो। अर डड न आप री पूछ सू बाध लियो। दूसरा जिनावर या माग देखर अचम्भो करया तो गादडो बोल्यो—'आज सू इण बीड रो राजा मै हू। इ दर मन यो राजदड अर पट्टो सूप्या है।' बिचारा जिनावर डरग्या। इन्दर री आण कुण नाप सक ?

उण दिन सू गादडो बीड रो राजा बण बठ्यो। सारा जिनावर मुजरो कर अर हुकम उठाव।

एक दिन गाव सू दो कुत्ता बीड म आया। सजाग सू राजा गादडा री निजर मे आयग्यो अर ब लार भाग्या। राजाजी भी प्राण लयर भाग्या पण जीव न जगा लाधी कोनी। आखर एक घुरी देखी अर ब म बडग्या। घुरी रा मूडा सकडो हो। गादडा तो मायन चल्या गया पण पूछ रो डण्डो अटकग्यो।

कुत्ता आ पूग्या अर पूछ पकड लीनी। दोनू कानी खीचाताणी हुई। बिरछ पर बठ्या पखेरू बोल्या, 'राजाजी, आप रो पट्टो दिखावो कुत्ता

आप ई भाग छूटसी ।" धूरी मांय गादडै रै राजपद पर चोट लागी । बो जवाब दियो, "अर, किण न दिखाव् कुपढ मिलरया है ।"

इतर मे कुत्ता गादड री पूछ खीचर उण नै बार काढ लियो अर प्राण ले लिया ।

बात नई ही । भवर न गादड पर भाळ भी आई अर अ त मे दया भी आई । खर, दणो कर, उण री आ ई गत बण । पछ भवरो सोयग्यो अर नींद री देवी उण न सुपना री दुनिया मे ल उडी ।

भवरो सुपना री दुनिया रो रग देख्यो । ओ ससार नयो हो । टाबर छोटो हो पण डरपाक कोनी हो । एकलो चालता ई जार हो, मन री मोज म । आग सी एक नगर निजर म आयो । भवरो उण रो मारग लियो ।

नगर र नेड सी एक तळाव देख्यो, जठ एक गादडो निरभय बठ्यो हो अर दो कुत्ता भी नाड नीची कर्या फिर हा । भवर न अचरज हुयो आ गादडो तो कुत्ता सू डर ई कोनी ! अर य कुत्ता भी गादड सू दूर दूर ई फिर है !

भवरो ध्यान सू देख्यो तो गादडै र गळ म एक [illegible] टुकडो लटकै हो जिण ऊपर [illegible] । भवरै गादडै न पूछ्यो, "अर, तरै गळ म ओ काई लटक ह ?" गादडो मरजी स जवाब दियो, "सरकारी पट्टो ।" भवरो मन म सोच्यो—ओ सरकार रो नाम [illegible] । गादडै नै ओ पट्टो ऊपर पूजनीक बणा दियो ।

वाह र नया नगर ! अठ री सरकार तो बकरी न भी गऊमाता रो पद दे राख्यो है !

भवरो आग चाल्यो तो नगर री बस्ती सरू हुयगी ही अर मारग म लोग फिरता फिर हा । आग मू एक सवार तेजी सू आव हा अर लागबाग गलो छोडर पर हुव हा । एक जुवार गध पर चढ्या दडाछट आव हो । घाड रो पूरो साज गध पर मजा राख्यो हो—पीठ पर जीन गळ म गळपटियो अर मू ड म लगाम ।

सवार नेड आयगा जण भवरो मारग छोड्यो जरी तो सवार भाळ म भर्या मा बोल्या अर लोग माग बगा । वाह री पद म आमी ।" पण घाडा कठ ? सवार तो गध पर जीन माड राखी ही । आ काई नगर ? भवर र लारला वाता रा अचरज मिट्यो कोनी हो । वो गध र गळ कानी न्ग्या तो बठ भी एक गत्त रो टुकडो लटक हो जिण पर लिख्योडो हो—नवलखो घोडो ।

वाह र नवलखा घाडा ! रग है इ नई सरकार न ! अठ तो गधा भी नवलखा बणारया है !

भवरो आग चाल्यो । एक आदमी आपर घर र आग चूतरै पर बठ्या हा । आदमी बोळ हो 'बोल मिटठू सीताराम सीताराम ।" पण पखेरू चुप उभ्या उण आदमी र हाथ मू सीरा खाया जाव हो । भॅवरो नेड गयो तो दख्यो क पींजर र पखी रो रग तो काळा है । काई वेरो, काळी कायल हुसी । भवरा पींजर कन पूग्यो—"अर अठ तो कागलो है ! धन है ई नगर र लागा री बुद्धी न । म तो कागला भी पाळ है अर राम सीरो खुवाव है ।"

पींजर आगो भवर न नैयर बोल्या 'छोग पर रय । सूवा डरप है ।" अर ओ तो आर भी तमासो ! पींजर म तो कागला सवो बण्यो बठ्यो है । दियो फ्र्या ई सूव आळ रा जिण न इलरी भी कामी सूमी अर कागल न सीताराम सीताराम बोलणा सिखाव है । भवरो कागल र गळ कानी निजर करी ता बठ भी एक गत्त रो टुकडा लटक हो जिक पर लिख्योडो हा—'सुकराज' ! वाह र सुकराज ! इ नगर री तो माया इ न्यारी ! काळो कागलो भी हरियल बन रा सूवटिया बणारया है अर लोग मीठू मीठू कर है !

भवरा आग चाल्यो वो एक दुकान आइ। आ दूध दही अर चाय री दुकान ही। एक नौजवान साहब दूध रा गिलास लियो अर एक घूट पीयर गिलास न धरती पर द मार्या—"बईमान, या काइ दूध बच है? दूध म पाणी ई पाणी! क्यु ई सुवाद दूध रा कानी! मैं अबार इ सरकारी अफसर न ल्याऊ अर तर दूध री जाच कराव्।' दुकानदार मुळकया अर बाल्या 'साब, गरम मत हुवा। म दूध म पाणी री अेक बूद इ कद कोनी गरु। मैं ता सदा पाणी म दूध मिलावू हू।

दूसरी बात सुणता इ आसपास रा लाग भान जोर सू हास पडया अर भवर री आख्या खुलगी। दिन उग चुक्या हा। भवरो सुपन न भूल्यो कोनी अर सीधा बाबासा र कन आया — बाबासा, रात नै ता म्हे एक नइ दुनिया दखी। 'पछ सुपन री सारी बाता सुणाई अर भोळो टाबर बाल्या, "बाबासा, आ नगर कुण सा है? एक बर आ नगर आजू दखा ता घणा मजा आव। आप भी साग द चालो।"

बाबासा मुळक र बाल्या नाना, हाल इ तू टाबर है, पूरा भद समभ कोनी। तू सुपन म दख्या जिको नगर कोनी। आ ता दस है, आपणा भारत दस।

वचन-वीर

साहित्य शास्त्र रा भारतीय आचार्य वीररस रा च्यार विभाग (युद्धवीर, दानवीर दयावीर अर धर्मवीर) लिखर चुप हुया अर व आगे माथो घुमावा री कद ई चेष्टा कोनी करी। पण आधुनिक युग मानवता लोक व्यवहार र आधार पर ई विषय म विशेष अध्ययन करयो अर फलस्वरूप कई नुया तथ्य उजागर हुया। ध्यान राखणो चाहिजे क अ नुया तथ्य भी कम महत्वपूर्ण कोनी।

म्हारो विश्वास है क इ विषय पर और भी गहर विचार अर चिन्तण री जरुरत है। जे कोई शोध छात्र आ विषय लेयर गम्भीर अनुसन्धान कर तो घणी चोखी चीज त्यार हुव।

विविध वीरा माय वचन वीर री विशषताआ न्यारी है। कई लोगा इ शब्द न प्रणवीर र रूप म भी ग्रहण करया है अर प्राचीन प्रणवीरा म हरिश्चन्द्र तथा भीष्म पितामह आदि री भोत मोत बडाई करी है। इणी भात मध्यकालीन प्रणवीरा म चौड सिसोदिया अर पाबू राठौड रा भी गुण गाया है। पण म्हार ध्यान सू वचनवीर एक दूसरी ई चीज है।

असल म वचन वीरता रो सम्बन्ध साहित्य अर नीति शास्त्र सू कम है अर आ विषय तो सीधो राजनीति अर अर्थशास्त्र सू सम्बन्धित है। ओ ई कारण है क वचनवीर मनख्यो इ समय अर स्थिति र अनुसार युद्धवीर दानवीर दयावीर अर धर्मवीर आदि सात सतील वीरा रा लक्षण उपलक्षण परगट कर सक है। ओ रणखेत सू कोसा दूर खडयो जुद्ध म जूझ सक है, हिरण न पूर्ण रूप सू काठो राखर दया सू द्रवित हुय सक है, एक पीसो हाथ सू छोड बिना मुक्तकण्ठ सू दान कर सक है अर धरम सू सवथा दूर रयर परम धार्मिक रूप धारण कर सक है।

वचनवीर री महिमा घणी ऊची है। आ वचन मात्र सू गरीबी हटा सक है बजार र चढत भावा न तळ उतार सक है, देश म फल्योडी भारी सू

भारी बकारी नैं दूर भगा सक है जनता रो जीवनस्तर ग्रासानी सूं ऊंचा उठा सक है। ग्रो दुरमख काळ म भी कम सूं कम भूख सूं तो एक ई मिनख न मरण कोनी देव। जठ जनता न पीवण नैं पाणी न मिलै, बठ वचनवीर पताळ ताड गगा बुहा दव। ग्रो सूना धोरा न हरया भरया खेत कर दव। ग्रो परबत नैं फोड'र सीधी सडका निकाळ देव। ससार मे इसो कुण सो काम है, जिको वचनवीर बोली मात्र सूं नी कर सक ? बड सूं बडो कमण्य जनसमूह जिको काम घणा सूं घणो समय ग्रर श्रम लगायर भी पार नी पाड सक, बो काम वचनवीर बस जबान हलायर कर सक है।

वचनवीर रो प्रत्यक्ष गुण देखणो हुवैं तो ग्राप किणी पार्टी र चुनाव घोषणापत्र न बाचो, उण री प्रचार सभावा रा भाषण सुणो ग्रर ग्रत म उण रैं विजयोत्सव री धूम देखो। जद वचनवीर उद्घाटण दोरो कर तो उण री सेवा मे पुष्पहार साथ समर्पित मानपत्र ग्रर मागपत्र री महिमा रो मरम पिछाणो। ग्राप र नणा ग्राग नौरगी तसवीर नाचण लागसी। दाता री वचन चातुरी ग्रर ग्रहीता री वाकदान कुसळता रो सब सूं ऊजळो नमूनो ग्राज रो ग्रभिनन्दन पत्र है। ग्रो सम्मानपत्र पडता री देवस्तुति नैं पर बिठाय दीनी ग्रर भाटा र विरुदगान न तो इसी मात देई क बो ससार सूं ई उठग्यो। दूजी तरफ म्हारो निबध नायक कल्पवृक्ष री तो बात ई के, ग्राशुतोष शिवजी सूं भी ऊची गुणगरिमा सूं दीप है।

वचनवीरता र प्रचार प्रसार न ससार व्यापी बणावण सारू ग्राकाश वाणी ग्रर भात भतीला ग्रखबार ग्राज र वज्ञानिक युग रा प्रमुख साधन हे। पण रागद्वेष सूं तो दुनिया भरी पडी है। जे एक देस माय एक मिनख लोहपुरुष मान्या जाव ग्रर दूज देस म उणी न कागजी शेर कयो जाव तो काई ग्रचरज री चीज कोनी। ग्रामीण कथावा माय भी ता वचनवीर न 'ढफोळसख' कयर मूखत:पूण द्वेषभावना दिखाई गई हे।

नादान लोग वचन वीरता र मनोवज्ञानिक महत्व न के समझ ? वचनवीर न छोडर इसो कुणसो कमवीर है, जिको बिना हळ चलाय दिवाला पर ग्रर दफ्तरा म पोस्टर पेपर देस न ग्रन्न रो ग्रखूट भडार बणाय सक है ? वचन वीर घोर निराशा री घनघटा नैं फाडर ग्राशा रो चद्रमा उगाव विपदा र भवर जाळ म फस्योडी न्याव न काठो राख, सकट रैं विकट बन म भटकता जातरी न मारग सुभाव, बळत बाळू प्रदश म तिस मरत मिनख रो गळो गीलो कर, जिन्दगानी र तल बिना बुभत दीव न जगतो राख।

वचनवीरता रो व्यावहारिक पक्ष भी ध्यान देवण जोग है। आ इसी दुकान है जठै गाहक अर विक्रेता दोनूं लाभ में रवै। आ ई कारण है कै कई विद्वान वचनवीर नै व्यवहार-वीर अथवा व्यापार-वीर री संज्ञा भी देवै है। जुद्धवीर री रणखेत में नाड कट जावै तो पछै विजयोत्सव रा मनवाळै उण नै किसो सरजीवण कर सकै ! कोई दाता जोश में आयर एकर धनराशि हाथ सूं छोड चुकै तो बस छोड ई चुकै। उण रै पल्लै में पाछा रिपिया कुण घालै ? वीरलोक में तो बस वचन वीरता ई इसी चीज है, जिण रै प्रयोग में गुड लागै न फिटकडी पण रंग आवै चोखो। बिना चोसगी सीरो सुधारबा रो काम वचनवीर ई कर सकै है। आ बात और किणी रै बस री कोनी।

आ घणी खुसी री बात है कै आपणै देस भारत में आजादी पाछै वचनवीरां री संख्या दिन दूणी अर रात चौगणी बधती जाय रई है। जनता भी वचनवीरां नै पूरो सम्मान देवै है। अब तो सरकार रो कर्तव्य है कै प्रति वर्ष सर्वश्रेष्ठ वचनवीर नै प्रमाणपत्र, पदक, धनराशि आदि देयर सम्मानित अर अलंकृत करै।

आजादी री लूट

आजाद सभा र चौवारै म मायला भेळा हुयर अखबार रै समाचारा री चर्चा करता । सगळा आप आप री राय पर घणा जोश सू अडता अर कदे कदे विवाद रा पाळा भी माड लेवता । भात भात री दलीला दी जावती अर इसो भान हुवतो जाण मार मुलक रो भार उणा र माथै पर ई आय पड्यो हुवै । वा र वाद विवाद सू न क्यु बणतो अर न क्यु बिगडतो सारी चीजा आप री ठोड ज्यू री त्यू ई रवती पण फेर भी सभा मे भायना रो औ मेळो मडतो जरूर अर घणी रात पडे ताई सगळा वचन-सूरमा जूभर आप आप रै घरे जा सोवता ।

सभा माय भाषण री व्यवस्था भी करी गई ही । शनिवार न बारी बारी सू एक जणो व्याख्यान देवतो अर दूसरा सगळा साथी सुणता । व्याख्यान र विषय री छाट री तरीको भी आजाद-सभा रो आप रो न्यारा ई हो । हरेक श्रोता आपरी पसद रो विषय एक पर्ची पर लिखर चुपचाप पेटी म नाखतो अर अत मे भाषणदाता पेटी सू एक पर्ची उठायर उणी विषय पर बोलणो सरू करतो । व्याख्यान देवणियो ई उण दिन सभापति बणतो ।

आज भाषण देवण री बारी उत्तमचद री ही । सभापतिजी आप री गादी पर बिराज्या अर पेटी माय सू एक पर्ची काडर विषय रो नाव बाच्यो –'आजादी री लूट' । लिखबा हाळ री सूझ अनोखी ही । सब सू पहली सभापतिजी पर्ची रा आखर बाचर सगळा न सुणाया, पछ गभीर हुया अर इण भात बोलणो सरू करयो—

'साथियो, आपा जद सू होस सभाळ्यो है, आजादी री लूट मनी भात सू देखता आय रया हा । च्यारू कानी मुलक माय आजादी री लूट माच रयी है अर या सालू साल बधती ई जाव है । पछ ई र बाबत नई चीज काई बताई जाव ? हा, आप लोगा न मैं पुराणी वाता जरूर बता सकू हू, जिणा

सू परगट हुवै क आगला आदमी कितरा घणा स्याणा हा कै व आगै री सारी विगत पहली ई माडर मेलगा । तो एक बात सुणो—

"किणी गाव मे चमारा रो एक घर हो । पाच जोध जुवान बेटा अर एक बूढी मा । अ छव् जणा घर मे रवता । छोरा मजूरी करता अर पेट भरता । पण इण सू सतोष कोनी आयो तो एक रात पाचू बेटा अर छठी बा री मा मिलर राजसुख भोगण री उपाय साच्यो । बेटा खासा जोरावर हा तो पछ मजूरी क्यू कर ? व भी ठाकरा ज्यू धाडा मार अर घरा बठ्या मोज कर । छोरा र या बात दाय आई अर व उणी रात डाम उठायर घर सू भीर हुया ।

रात अधारी ही । आग सी जायर पाचू धाडेती चू धगा अर मारग भूलर धन र खोजा ऊजड चाल पड्या । सारी रात ऊजड चालता चालता भाग फाटी तो एक गाव नेडो दीरयो । गाव र बारण करतो एक घर थारो ई हो । नया धाडवी आखी रात रा आखता हुयोडा हा । अब ई घर न लूटबा खातर व ई री पाछली बाड र लाय लगा दीनी । पहली बाड बळी अर पछ छान झूपडा बळवा लाग्या तो रोळो मच्यो । गाव रा लाग लाय बुझावण न भाज्या पण ई सू पहली ई घर तो बळर राख हुय चुक्यो । बची एक बूढळी चमारी । नया धाडवी आपर ईज घर न आधा हुयर बाळ नाख्यो ।'

एक बात पूरी हुवता इ श्रोतागण जोर सू ताळा बजाई तो सभा पतिजी रो मन मोत घणो राजी हुयो अर आपरो भाषण आग चालू करयो–

आज आपण देस माय आ ईज हुय रयी है । नया धाडवी ई बात र चमारा ज्यू आपरै देस न ई आधा हुयर उजाड रया है । पण अठ ई बात नीमडी रोना । ई लूट रा और भी अनेक रूप है । एक बात और सुणो–

एक नगर म कई खोजा रवता अर नाच गान सू आपरो पेट भरता । डीन म घणा ई लामा ठाडा लागता । पण भगवान बा नै न लुगाई बणाया अर न मोट्यार । एक दिन सगळा खोजा मिलर मतो उपायो क व भी धाडो मारणो सरू कर तो मौज सू जिन्दगी रा दिन निसर अर जग जण र आग नरका करण सू पिण्ड छूट । एक दिन दस प दरा खोजा जुवान धाडवी रो रूप धारण करयो अर रात पडता ई रोही माय जाय पूग्या । मारग र नेड सी एक घोर री ओट लेयर व बठग्या ।

रात अंधारी ही। जरा सो खुडको हुवतां ई थै नया मोट्यार डरपै अर भेळा हुव। इण भांत राम राम करता रात आधीक बीती पण मारग मे एक ई बटाऊ निजर नी आयो तो अ पाछा आपर डेर जावण री सोची।

इतरै म ई सजोग सू तीन ऊटा पर तीन सवार उण मारग मे तेजी सू आवता निजर पडचा। खोजा र नई उमग जागी अर ब मगळा लाठिया उचायर मारग म आय ऊभा हया। ऊट नेडा आया तो नया धाडवी मिनर हाको कर्यो— गेर द्यो, गेर द्यो, माल गेर द्यो।"

ऊटा पर उणी नगर रा तीन रजपूत हा अर धाडो मारर घरा आव हा। ठाकरा न घणो अचरज हुया क बारो मारग रोकण हाळा अ नया सिरदार कठा सू आ पूग्या ? झट तीन् ई रजपूत आपरी ब दूका री नाळ सीधी करी ता खोजा देख्या क अब ता मरया। पछ काई हो, मगळा मिनर नाचणो गावणो सरु कर दियो। अब ठाकरा सारी लीला समझी अर मुळकया ता खाजा वा न जीत री घणी घणी बधाई दी अर इनाम मागी। ठाकर धाड र धन माय सू खाजा न भी मई बखसीम करी अर आपर मारग चल्या गया।

इतरी बात सुणी तो श्रोतावा री ताळिया और भी घण जोर सू बाजी। सभापतिजी न नयो रग आयो। ब भाषण चालू राख्यो –

देस मे घणा इ लोग सेवा, सुधार कल्याण, कळा, सहकारिता, सस्कृति र नावा सू भात भात रा साग भर राख्या है अर इ बात र खोजा ज्यू धाड र धन माय सू इनामा लेयर मोज कर है। आ लूट भी कम नी है। ई रा भार सार मुलक पर पड है। एक बात और सुणो—

एक डूम आपर जजमाना र घरा गावतो बजावतो अर दिन गुजारतो। एक बर पाच सात जजमान ठाकर भेळा हुयर धाड पर जावण लाग्या तो डूम बा न अरज करी क जे सिरदार उण न भी साथ लेय लेव तो बै र भी क्यु माल मत्तो हाथ पड अर बो सिरदारा रो जस गाव। ठाकरा र आ बात जचगी अर ब डूम न भी धाड म साथ इ राख लियो। ठाकर ऊटा पर हा अर डूमडा पाळा हा। ब आप रै गाव सू घणी दूर जा नीमरधा अर एक जान लूटी। लूट र बखत डूम तो डरता दूर जायर लुकग्यो। जद मान लेयर ठाकर ऊटा पर सवार हुया तो डूम भी वा र लार चाल पडयो। धाडविया न

भय हो क आज रा रो पीछो जरूर करयो जावैलो अर ओ धन सहजां ई घरां पुग कोना। ऊट आग हा अर लारन डूम भाग्यो आव हो। डूम र गळ मे ढोलकी ही। भागत स्म रा पग उलटा सीधा पड हा अर ढोलकी भिडर आप ही बाज ही।

ठाकरां दख्यो क ओ डूमडो मरावनो। लारो करणिया ई री ढोलकी रा आवाज पर सीधा आ दाबना। बडरा ठाकर डम न दकाल्यो—"अर डमडा ढोलकी बजाव मत। तू मरनो अर म्हान मरावनो।" डूम तो आप ई घबराय रयो हो। बो भागतो भागतो बोल्या "हुकम, बजाव कुण है? आ तो आप ई गळ पडी बाज है।"

श्रोतावा री ताळी फेरू जोर सू बाजी अर बाजती इ रयी तो सभा पतिजी हाथ उठायर बाल्या—

" बात र डम ज्यू घणा इ लोग आजादी री लूट म भाग्या फिर है पण बा र गल्ल बयु ई नीं पड। भात भात रा सकट बा र सिर जरूर पड है। आजादी री ढोलकी ता आप ई बाज्या जाव है। ई न कोई बजाव कोनी।

भाषण पूरा हुया अर सभापतिजी हाथ जोडर आपर आसण पर बठग्या। आज रा जलसो घणा मजदार रैयो, आ सगळा री राय ही।

करावो। आप री शारदा रो परसाद सगळा न बाटता रवो। आप चारण धरम न ारण करो। पछ किणी बात री कमी कोनी रव।'

मन्त्री र वचन सू बारठजी री आतमा म बीजळी सी चिमकी। बा र हिरद म नया ग्यानगो दीप्यो। बूढ सरस्वती पुन री वाणी जागी। बारठजी चुप काना रय सक्या अर बोल्या मरदा मुलक म आज अल्ला री मा रा चाळीसा हुय रयो है अर आपा सगळा मून धारण कर राखी हा। इण भात चुप रया काम कोनी बण। अब ता आग आवणो इ पडसी। अल्ला री मा र चाळीस री बात सुणा—

एक मुरतब हाळा मीयाजी हा। ठिकाण मे हाकम, धरम सू मुसळमान अर जात सू क्यामखानी। इ कारण मीयाजी रा हिदू अर मुसळमान सगळा म इ पूरो आवणो जावणो अर मान सनमान हो।

मीयाजी र बड बट रो ब्याव मडयो तो घर म आणद री लहर सी फलगी। ठिकाणा रा हाकम हा ना बा र बट रो ब्याव भी पूर ठाठ सू ई हुवणो जरुरी हो पण मीयाजा कन पीसा कोनी हा अर पीसा बिना ठाठ बण किण भात? मीयाजी क्न तिन्वर खासा रकम साथ करी। हाथ म रिपिया आया पछ ता खाजी पूरा फयाज हा। ब्याव रो ऊचा ठाठ बाध्यो, कमी किणी बात री कोनी रवण दी।

मीयाजी गे मुरतब बडो हो तो बट र ब्याव री मळ भी बडी इ करण जोग ही। नगर रा सगळा मातबर ब्रिरामण महाजन जिमावणा जरूरी हा ता कमीण-कारवा रो भी पूरा ध्यान राखणा हो। अ सगळी बाता सोचर हाकम साब मळ रो सगळो इन्तजाम पच महाजना न सूप दिया।

हाकम री हवली र अडका नोहर म मळ रो इतजाम हुयो। महाजना यारो काठ्यार करचा। हलवाइ बुलाया गया। नौकर राख्या गया। सगळो काम पूरी साव सफाई सू न्यारो करचो गया।

नाहर म खासा चेळ हुग्यो। मीयाजी नाहर म आवता बगाबर पण किणी चीज र हाथ कोनी लगावता। धरम रा भी ता पूरा ध्यान राखणो हो। नाहर म कूचा अर हुकम महाजना र हाथ म हा, मीयाजी ता बस दूर बठ्या मालक हा।

मळ र दिन खासी भीड भेळी हुई । वटक रो सुरगो माज सजाया गयो । मीयाजी र मोद रो पार कोनी । नगर रा बडा बडा लोग आव हा अर हाकम मुळक-मुळक सगळा र अतर फुलेल लगाव हा । जीमण म सतपक वानी रो ठाठ हा । बडो घर, बडा उच्छव, पछ कमी किण वात री ?

इणी बखत बूडळा काजीजी भी नौहर म आया पण मीयाजी री निजर बा पर पडी कोनी । काजीजी नाक एक कूण म एकला बठग्या अर मेळ पर चौतरफ निजर नाखी । डोकर थाडी सी भेर म ई सगळी बाता रो भेर लिया अठ किणी मात री गेवटाव कोनी । कोई भी आवो अर सतपकवाना जीमो । ल्हुकाछिपी चारी भी कम नी हुव ही । कच्चो सामान भी चोरण जाव हा अर मिठाई रा तो टोपिया उड हा ।

थोडी देर बाद मीयाजी फूल्या फूल्या कूण कानी आया तो काजीजी न चुपचाप बठ्या दखर बोल्या, 'माइता, आप कूण म एकला क्यू बठ्या ? घर म इतरो वडो उच्छव अर आप चुप बठ्या ? मालिक घणी अडीक बाद ओ दिन दिखायो है ।

काजीजी गभीर हुयर धीरा सी उत्तर दियो, 'मायाजी, नाइ ता यहा खासा है परन्तु यह हो क्या रहा है यह मेरी समभ म नहीं आता ।' लगता ई मीयाजी उत्तर दियो, वाह, आ भी पूछण री बात है ? आर र, पात र ब्याव री मळ है । आज विरामण महाजना रा [illegible] है अर [illegible] दिन आपणो जीमण हुसी । पहली अ सळट लेव ता पछ [illegible] हाथ मे लय लवा ।

मळ म खुली लूट देखर काजीजी [illegible] हा । डोकरा बोल्या खूब रहा । आप ता मट का [illegible] है आर मैं न इस मल्ला की मा का चाळीसा समभा । [illegible] आर मान उडाव । कोइ रोट टोक नही । एसा ता [illegible] में ही होता है ।

काजीजी री जवान [illegible] मीयाजी मन म मोच्यो क बात बढाया डोकरा [illegible] । [illegible] गाजिय सू मतर रे सीसी काढी अर [illegible] नागाना नाख्या ।

इण भात [illegible] था अर [illegible] मूड काना [illegible] आज [illegible] मा इ बात रह ई । [illegible] पिता सू अठ [illegible]

गोठ म किणा भांत री रोक रुकावट भी कोनी। ब्याव री गेळ र नाव परे अल्ला री मा रो चाळीसो हुय रयो है।'

जिक दिन आजाद-सभा म कोई खास कायक्रम हुवतो, उण दिन जलसा र बाद चाय भुजिया जरूर आवता। आज भी चाय भुजिया आया। पण ठाकरजी चाय खातर नटा नटी करी ता सभा मन्त्री बोल्यो, 'बाबासा, चाय खातर नटो मतना। अ न तो अल्ला री मा र चाळीस रा लाड्डू है अर न मौयाजी री मेळ री मिठाई। आ ता बुद्धिप्रदा शारदा रो ई जमान रो प्रसाद है।

कागद रो रिपियो

ईसर चौधरी पचासी म पग मल्या हो अर उरा र गांव म एकर जातनाथजी रा आवरणो हुया। चौधरी पर नाथजी महाराज री वाणी रो इसो प्रभाव हुयो क बो उरा र लार ई सिद्धी लवरण खातर घर सू निसरग्या। नाथजी हिमाळ पर्वत म पूग्या अर अठ साधना म लीन हुया। ईसर वा री सेवा कर। बन म रव अर बनफळ खाव। यू करता बीस बाईस बडा वरस बीतगा अर आखर एक दिन नाथजी आपरी जात परम जोत म मिलाय दीनी। चौधरी न गरु म्हाराज कोई सिद्धी कोनी दी अर बो पाछो ई आपर घर आ पूग्या। घर हाळा घरणा राजी हुया। दिन म खोयोडो ईसर साभ पड्या आखर घर म आय पूग्यो।

चौधरी देख्यो क इतर बरसा म घर छान झूपडा सू ई नई पग साय इ पोत-पातिया सू भी ठाडो भरग्या। नाथजी म्हाराज बन म सिद्धी कोनी दई परा घर म खूब घरणी देय दीनी। चौधरी नै या ठाह नी ही क इतर बरसा मे देस कितरो बदलग्यो है अर कितरी घरणी तरक्की हुयगी है। ईसर मन म करी क अबकर सहर म तो चालर अर पुराण प्रेमिया सू तो मिला।

एक दिन ईसर तडकाउ उठ्यो अर ऊ ट पर पिलारण माड्यो तो छोरकिये छोर री बिनरणी पोत र हाथ मसखरी मे कुहायो के बाबो पहली सहर जावतो जद कई चीजा ल्यावतो। आज बो सहर जाव है तो उठा सू मिरच जरूर ल्याव। इतरी सुरण र चौधरी ज्यु मुळक्या अर ऊट पर लकडिया रा नाखो बाध लियो। आप ऊ ट री मूरी पकडी अर सहर कानी चाल पड्यो।

चौधरी सहर म पूग्यो तो दिन चढगो हो। गळी म बडता ई एक जरगो बोल्या, 'डोकरा, क्यू ऊ ट न बाभ मार है ? तीन रिपीया ले अर लादो गर दे।' इतरी सुरण र चौधरी मुळक्यो—'सहर रा लोग मसखरी करे बिना कोनी रव, च्यार आना री लकडी रा तीन रिपीया धाम है। इसर चुपचाप

माल पड़्यो तो आगे सी जातां एक दूसरो आदमी मार्ग रा मांडै तीन रिपीया घाया । अब चौधरी नै बयूं अचरज हुयो क लोग इतरा घणा दाम देवणा क्यू करै है ? आगे सी जातां एक तीसरो आदमी च्यार रिपीया देवणा करया तो चौधरी बात री तूटो काडण रै हा भरी । फेर क हां नारै रा च्यार रिपिया चौधरी रै हाथ मे आयगा । च्यार आना रै माल रा च्यार रिपिया लेयर चौधरी राजी नीं हुयो अर चकित हुयो ।

खैर, रिपिये रिपिये रा च्यार नोट रुमाल रै पल्ल सूं बांधर चौधरी बाजर मे आयग्यो । अब मिरच खरीदणी ही ।

ईंमर एक दुकान पर ऊंट री मूरी पकड्यां गयो अर एक रिपिये री मिरच मागी । बाणिया तराजडियो उठायो अर मिरच तोली । चौधरी आपरो गाबलो मिरच खानर बिछा दियो । बाणियो भाग्यल रै एक कूणा मे मिरच गेर दी अर रिपिये खातर हाथ बाड्या । चौधरी बोल्यो सेठ रिपिया कठै जावै है ? पहली मिरच तो पूरी तोल । तराजडियै सूं क बार लोनमी बडी नापडी ले ।' बाणियो चौधरी रै मूंड कानी देख्यो अर बोल्यो क रिपिया री मिरच लेवणी है ? एक री ला आयगी है । अब चौधरी चकराया— अर मिरच नै क खायगो ? रिपिये री मिरच इतरी सी ? इतरी मिरच खातर चौधरी रिपियो कोनी काट सक्या अर आपरो भावना चुपचाप उठायर मिरच दुकान री बोरी मे पाछी ई गेर दी । बाणियो थाळ बाळा री रेख राखी अर चौधरी दुकान पर सूं उतरग्यो ।

आगे सी जायर चौधरी दूजी दुकान पर भी मिरचां रो भाव पूछ्यो तो बाणिया बाल्या— सात रिपिया सेर । अब चौधरी रै ध्यान मे या बात आयगी क लाद रा रिपिया ठीक इ मिल्या है । मुलक री हवा ई पळटगी ।

ऊंट री मूरी पकड्यां चौधरी मनसुख सराफ री दुकान पर आया । मनसुखा एक माचली पर पड्यो खास हा अर छोरा काम कर हा । चौधरी नै इतरा बरस बाद देखर बाणियो भात राजी हुया अर उण नै ऊंट बिठायर राजी खुसी री पूछी । चौधरी भी बाणिय रा सारा समाचार पूछ्या ।

बखत ग्यारा बजे नेडो आयगो हा । एक टाबर गांव सूं टाबर थाळी लियां दुकान मे आयो तो उण नै देखता ई मनसुखा बाल्या भीतर मेल दे ।' टाबर भीतर जायर थाळी मेल दी । इसर समझगा क थाळी मे रोटी आई

है। पण आज वो गेरिया री रेम भी गेरियां री बानी पूछी। पहली ईसर आवतो तो सदा ई मनसुखो अडायर रोटी खुवावतो। या नई चीज क्यू कर हुई? चौधरी न भूख लागरी ही पण वा चुप ग्यो अर म्यान सू च्यारू नोट खोलर मनसुख न दिया। चौधरी बोल्यो 'भाया, मनैं बदळ म चादी रा रिपिया दे द। ये कागद फाट ज्यासी।'

मनसुखो रिपिया लिया अर आपर बेट नैं देयर बोल्यो, 'आज रै बखत चादी र रिपिया रा तो दरसण ई कोनी हुव पण ईसर थारा बरसा सू आयो है, उणरो काम तो करणो इ पडसी।' छागे चादी रा एक रिपियो पई माय सू काडर चौधरी र हाथ पर मत दियो। चौधरी रिपिया लेयर फर हाथ पसारयो तो मनसुखो मुळक्या अर बो यो, 'या हिसाब तो पूरो हुयो। अब और भी चादी रा रिपिया चाव है क? कोई मतारथ मे देवणा हुव तो नाट देवणा चाहिजे। अब वो बखत कोनी रयो है।'

अब तो चौधरी और भी चकरायो—'अब रिपिया र बराबर भी रिपिया कोनी मिल! ओ र जमानो आयो। बाणियो चौधरी र अचरज नै समभगो अर फर बा या, 'अर तू नारत बीस बरसा कुणसी दुनिया मे रयो? भगवान र घरा जायर अब पाछो धरती न दवण आयो है क? पहली चादी रा रिपिया चालता, अब कोरा कागद रा चाल है। पछ दोनू बरोबर क्या हुव? आपा बूडा हुयग्या तो रिपियो भी बूढो हुयग्यो। मेरा दो रिपिया सेर र भाव रा घिस्ता खायोडा है, अब दो रिपिया सर भूगडा बिक है। सारी चीजा रो ओ ही हाल है।'

चौधरी चुपचाप चादी रो रिपियो पई पर पाछो मेल दियो अर सठ रा बटा च्यारू नोट काडर चौधरी न पकडा दिया। अब चौधरी ऊट री मूरी पकडी अर आग टुरग्यो।

बखत घणा हुयगो हो अर चौधरी रै साथ ऊट भी भूखो अरडावै हो। ईसर सहर सू निसरयो अर धरमसाळा र तळ सातूरया री दुकान पर आयो। अब दुकान पर सातूरया रा बटा मालक बण्या बळ्यो हा। सातूवा न पार पडया पदरा बडा बरस बीतगा हा। चौधरी नय दुकानदार सू सगळी बाता पूछी अर पछ उण न तीन रिपिया दयर बा या, 'भाया, तू म्हान कोनी जाण जाणबा-हाली आगल घरा गयो। पण खर, मैं आवतो चारा कोनो ल्यायो।

सिरी अटळ छत्र री जय

सनिवार नै आजाद सभा री साप्ताहिक बठक सानर भायला भेळा हुया। आज रा मुख्य अतिथि जूना साहित्यकार व्यासजी हा। श्री व्यासजी रो नई पीढी र साहित्यकारा म आवरण रा श्रो पहला ई माको हो। ब नय साहित्यकारा री रीत नीत नै कम ई पसन्द करता पण अति आग्रह सू सभा री अध्यक्षता करण खातर बुलाया गया हा, इ कारण मत्री री बात राख दीनी अर सभापति री गादी पर घण मान सू विराजमान हुयग्या।

आजाद सभा री बठक मे एक ई भापण हुवतो अर भापण पछ उण पर चरचा चालती। पण साथ ई करडा नियम ओ भी हा क भापण रो विषय सभापति पर नी छोडया जावतो अर प्रत्येक सदस्य आपरी मनस्य। मुताबिक विषय रो नाव लिखर एक परची पटी म छोड दवतो। सभापति र हाथ सू जिकी परची निकळती, उणीज विषय पर भापण देवणा पडता।

परचिया पडी अर अत मे पटी श्री व्यासजी र आग आइ। सभापति र नात ब आख मीचर पेटी माय सू एक परची उठाइ अर उण पर दज विषय रो नाव बाच्यो–आ क आफत आई ? आ गावन नो मथरा सू एकदम इ यारी! छोरा मोन चाल खेनी अर अठ हया लेवण न बुलाय लिया।

परची पर भापण रो शीपक दीयाडा हा–'सिरी अटळ छत्र री ज।' देखण म गो विषय धार्मिक सा लाग हा पण इ मडळी का धरम सू क सरोकार ?

श्री व्यासजी री आग्या म तानी आई पण सभापति पद र गौरव रो घ्यान राखर ब चुप रया अर किणी भात काम सळगावण खातर माथो घुमायो। पण बाल क ? विषय की बकम र तक री एक ई ताळी कोनी लागी।

श्री व्यासजी र महाप्रभु रा इष्ट हा। ब काई भी चीज महाप्रभु न भट कर्‌या पछ ई प्रसाद लवना आखर आ विषय भी घण भक्तिभाव सू

चुपचाप बा र चरणा म ई गन न्या । पछ र दर री ? शी व्यागजा र न्नि ग्रर न्गाग म नद पुरणा हुइ ग्रर व वानगो गम रर न्या—

ग्राज र भापण रा विपय एक ग्राडी-गाइ है । र नागग म्हारो भापण भी ग्राडी दाद द हुवसी । इ ग्राडी रा फळ वान्गो था नयुवका र हाथ है ।

एक नगर म नया राजा गादी पर बठयो । राजा था दाई नाजवान इ हो । राजतिलक रो उच्छव राज भर म घणै उत्साह सू मनागो गया । झंडा फहराया गया । जलूस काडया गया । टावरा म मिठाइ बाटी गइ । गळी गळी म गीत गाया गया । जनता भात राजा हुइ क म्हार नया राजाजी गादी पर विराज्या है । ग्रब नया नया काम हुसी ग्रर चौफरी उन्नति रा राजमारग खुलसी । नया इतिहास बणसी । नगर रा नाव हुसी ।

राजतिलक रा दस्तूर हुयो ग्रर पछ नया राजाजी ग्रापरो दरबार लगायो । मरजीदाना नै नया नया पद ग्रर नइ नइ पदविया दागी । ग्रो काम ता पुराणी परम्परा सू इ हुया पण राजाजी दरबार म एक घापणा नई करी— ग्राज सू नजर नवण रा दस्तूर बन्द है । सगळा न वालण री पूरा ग्राजादी है । सारी प्रजा राज री नजर म समान है ।'

'नय राजाजी री ग्रा घापणा सुणर ता सारी जनता खुसी सू फूलगी ग्रर इसा ग्रनुभव कर्यो जाग पिरथी सुरग बणगी ह ग्रर राज जण जण र हाथ म ग्रायगा ह । जनता घण सू घणो जोर लगायर जय जयकार करी ।

ग्रब राजाजी रा याय विचार चालू हुया । जिण राज म खरो याय नी हुवै वो काइ राज ? राजाजी री मास्या हा क व इ जुग रा विक्रमादीत बाज ग्रर हजार बरसा वा र याय री चरचा चालती रव ।

याय करण माथ कोटवाळ तान जणा दरबार म हाजिर करया । तीनू इ मा यो रा ग्रपराधी हा ग्रर सजा रा हकदार समभर दरबार म ल्याया गया हा । कोटवाळ हाथ जाडर खुलासो करया क इणा माय सू पहलो ग्रादमी नावजादिक चोर है दूजो प्रसिद्ध धाडवी है ग्रर तीजा नामी ठग है ।

नार नाची निजर सू कोटवाळ कानी देख्या, धाडवी ग्रास्या लाल कर लिनी पण ठग बयू मुळक्या ।

'राजाजी गंभीर हुया । ब याय रो आदश उपस्थित करणो चाव हा । अपराधिया री फाइला कोटवाळ र साथ ही पण राजाजी बा न देखबा री जरूरत कोनी समझी अर हुकम दियो क अपराधी जो कुछ कैवणो चाव, ब कह सक है । बा न बोलबा री पूरी छूट है ।

'राजाजी रो हुकम सुणर सार दरबार म सरणाटो छायग्यो पण चोर री निजर ऊची कोनी उठ सकी अर धाड्वी क्रोध र कारण क्यु बोल कोनी पायो । इसी हालत म ठग हाथ जोडर इण भात अरज करी—

'धमावतार राज र हुकम सू क्यु बोलणै री म्हारी हिम्मत हुई है । साथ रा दोनू तथाकथित अपराधी चुप है । पण म्हारो अन्दाज है कै ब भी म्हारी अरज ज्यू ई वालणो चावता हुसी ।

म्हारी अरज है क राजतिलक र उच्छव पर अपराधिया री माफी परम्परा सू हुवती रयी है । ई कारण जे कोटवाळजी अपराधी मान तो भी म्हान श्रीमान् र हुकम सू आज र दिन मुक्ती बखसाई जाव । राज माई-बाप है अर म्हे राज रा टाबर हा ।

इतरी सुणी ता राजाजी श्रीमुख सू फरमाया क पुराणी परम्परा पुराण जमान साथ गई । अब न्यायनिर्णय म भाई बेट रा लिहाज नी करयो जा सक । आज तो निरपराधिता रो सबूत दिया ई मुकती मिल सक है वर्ना ता सजा सुणाइ जासी अर बा भोगणी पडसी ।

'इतरी सुणी तो अपराधी हाथ जोडर और भी घणी नरमी सू निवेदन करया— राज रा हुकम सिर माथ पर है । पण जिण भात करसो खेती कर है, बाणिया दुकान कर है, सिपाही जुद्ध कर है, उणीज भात म्हे भी म्हारी पीढी दर पीढी सू चालया आवतो धधो करा हा । म्हारा बडका जी धन्ध री शिक्षा पाई जी ब ध सू उतम पेट पाळया, म्हे भी बो ई धधो चलावा हा । कोई आदमी आपर बडरा रो धधो कर ता बो अपराधी क्यू मान्यो जाव ? ध धो छोडया मिनख जीव किण जरिये सू ? राज म बेकारी फल्या तो हानि इ हानि है ।

राजाजी फरमायो—पण ध ध रो रूप देखणो जरूरी है । जिण काम सू परजा न हानि हुव अमन नै दखल आव, बो काम किणी रो धधो कोनी मा यो जा सक । और कुछ कवणो हुव तो कयो जाव ।'

अपराधी आजू सिर झुकायो अर नरमी सू निवेदन करयो—'राज रो फरमावणो सवा सोळा आना सही है । पण हुकम, आ तो राज री नई नीति

है। ई कल्याणकारी नीति री थरपना तो अब हुई है। आज सू पनी ओ सर्वोदयी राज पिरथी पर कद हो ? म्हारा धन्य भाग क नय इतिहास रो यो दिन म्ह देख पाया। पुराणी नीति मे पुराणा धन्धा चालता रया है, अब नई नीति म नया धन्धा चालसी।'

'इतरी सुणी तो राजाजी क्यु मुळक्या अर फरमायो 'मारी बात भाव ध्यान सू सुणी जाव है। ओर कुछ कवणो हे ता कयो जाव। पछ फसला सुणाया जासी।'

राजाजी र मू ड पर मुसकान देखर अपराधी नै चन सा आया अर बो हाथ जोडर घणा मिठास सू बोल्यो — पिरथीनाथ पुराणो जमाना गयो, पुराणा धन्धा गया तो पछ पुराणी बाता रो पाप म्हार माथ सू उतरया मा यो जाव। अब म्हान नया धन्धा बताया जाव जिण सू म्ह पट भर सका। टाबरा न पाल सका, राज री उन्नति म योग देयर म्हारो फज अदा कर सका। आप राज माई बाप है।

राजाजी चुप रयग्या। आखो दरबार कद राजाजी र मू ड कानी देख हा ता कदे अपराधी र मू ड कानी। पण अब ता सगळा री निजर राजाजी पर ई जमगी। देखा, राजाजी रो काई हुकम हुव ?

राजाजी गम्भीर हुयर फरमाया— आ बात म्हार ढुक है। अब ता सारा काम नये सिर सू इ करणा जाग है। इ मुकदम रा फसलो काल ताई मुलतवी राख्यो जाव है। सारी बाता सोचर फसला करया जावमी।

उण दिन रो दरबार समाप्त हुया। लोग नय दिन री उन्नीत म राप-प्रापर घरा गया।

दूज दिन राजाजी र हुकम सू ऊपरला तीनू सज्जना न राज म राग लिया गया। चार न चौकीदारी रा महकमो दियो गयो। ठग न व्यापार विभाग म् या गया। पाडवी न जन कल्याण रा खाता सभळाया गया। बोल—
'सिरी अटल छत्र री ज।'

भाषण समाप्त हुया। सभापतिजी आग गोचर महाप्रभु रा ध्यान लगाया, आखी ताळ चुप रया अर पछ मुळकर सा तामडळी कानी देख्या। तारी ग ।। ता या सू गूज उठी। सभापतिजी न मंत्री धन्यवाद दिया।

गाज री बठक नै विशष अवसर मानर मत्री चाय प्यावण रा हुकम करया। चाय पीवता भापरा पर चरचा चाली। अत म सगळा सदस्य या बात स्वीकार करी क साहित्यकार रो क पुराणा अर क नगा। बा साहित्यकार वला है गर नया-पुराणा पाद है।

तळै धरती ऊपर आकास

भायला री मंडळी जुडी अर एक छापो काढण रो बिचार बाध्यो। मगळा युवक देस र दुख सू दुखी हा अर नई नई चीजा लिखण रो चाव हो। ब आप री कलम सू देस रो उद्धार करणो चाव हा। छापो काढण खातर रकम चाहिज, जिकी बठ कोनी ही पण बा रो ध्यान ई चीज कानी कोनी गयो। तय करयो क पनी सारी सामग्री त्यार कर लेवा, पछ आग री बात सोची जावनी। छाप रो नाव राख्यो—'दुखियारो।' एक जणो सम्पादक थरप्या गयो अर दूजो व्यवस्थापक। और सगळा पद एक बर खाली राख्या गया।

सब सू पलो 'दुखियार' रा सम्पादकजी आप रो लेख त्यार करयो अर साथिया री मंडळी मे सुणायो। लेख रो नाव हो—'तळै धरती ऊपर आकास।' सम्पादकजी लेख सुणाव हा अर भायला ध्यान सू सुण हा—

खमाण री चौधरण टाबरा न जपायर आडी हुई। पण चित्त मे चन कोनी तो पछ नणा मे नींद कठा सू आव? चौधरी ऊट र माड गयो हो अर आवण आळो ई हो। फळस कानी क्यु भी खुडको हुवता तो चौधरण धणी न देखण जावती पण पाछी गुवाडी मे आयर माचली पर पड जावती।

आखर आधी रात गया खमाणो फळसो खुडकायो जद चौधरण उतावळी सी आग जायर फळसो खोल्यो तो ऊट कानी हो अर पिलाण खमाण री पीठ पर हो। खमाणो रोवती सी आवाज म बोल्यो—"परतिय री मां, ऊट टूटगो!" आग चौधरी र मू ड सू बोली कोनी नीसरी अर बा गुवाडी म आयर एक कूण मे पिलाण पटक दियो।

चौधरण समझ कोनी पाई क ओ हुयो तो काई हुया? ऊट टूट्यो किया? बा क्यु भी कोनी बोली अर धणी र आग एक थाळी म रोटी चटणी लायर मेल दीनी। खमाणो दो गासिया लेयर थाळी पर सरकाय दी अर पाणी पीयर खाट पर आ बैठ्यो।

खमाणो चौधरी र मेत छोटो सो हो अर घर मे सावणिया रम। दो आप अर आठ टाबर। धरती बस पच्चीस बिघा अर काट री मार उपर सू। खेती र दिना म खमाणो घणा ई पचतो पण कद मेती साथ दवती अर कदे कोनी देवती। ठाली रत म खमाणो ऊट रा भाडा कमावतो अर राम राम कर दिना न धक्को देवतो। अब ऊट टूटगा तो विचार न हार आयगी अर आग अधेरो ई अधेरो दीखग्यो। आज नया ऊट रठ ? अर रोती रा दिन भी नेडा आयग्या।

चौधरी चिन्ता म डूब्यो बठ्यो हो। चौधरण धीमी सी बोली म धणी न पूछ्यो 'काई बात हुई ? ऊट टूट्यो किया ? भार घणा हो के ? पण किणी खाड मे पडग्यो ?

दुख री बात सुणाया दुख मिट कोनी पण वयु हल्को जरूर हुव। खमाणो ऊट टूटे री विगत आप री लुगाई न सारर बताई। बो बोल्यो 'मठहाळो मोटळो बाबो ऊट भाड करयो हो। गावा म रा गत कर गावी है। बावो ब्याज उगावण न पातूमर जाव हो।

चौधरण बोली बो मोडो तो एकलो ई तीन आदमिया र बरोबर है। बिचार ऊट पर आछ्यो मार मरयो।'

खमाणो उत्तर दियो, 'आ बात मैं बिचारी अर एकर बाव न ई ऊट पर चढायर मूरी पकडाय दीनी। मैं लार न पाळो हुय लियो। ऊट आग नीसरगो अर बीच म छेटो पडगा।'

चौधरण बोली मोड न ऊट समझावणो ठीक कोनी हो। मूरी हाथ म राखणी ही। बो धरमसाड ऊट न भगाया हुसी ?'

खमाणो बोल्यो ऊट न भगायो कोनी। और ई अक्रम कर दियो।

चौधरण चिमकी। उण र ऊट टूटे रो घणो दुख हो पण फर भी बा पूरी विगत सुणबा खातर उतावळी हुय रयी ही। बा बोली 'इसो के अक्रम कर लियो, जिको ऊट इ टूटगो ?

खमाणो बोल्यो मोडा तो सुन दसर ऊट न आप र घर रो कर लियो। आग सी गया ता एक सेठ मिल्या। करम जाग सू मठ री मोटर खराब हुयगी ही अर आग जावणो जरूरी हो। मोडा सठ न भी ऊट पर बिठा लियो। अर सेठ तो माड सू भी वयु भारो ई हो।

चौधरण र मुह सूं निकळग्यो–'राम राम ! पछै तो छै गवारी हुयगी। विचार ऊंट नै ग्राछ्‌यो त्राव्यो मरीनिया !'

खमाणो बोल्यो 'हाल ई कं विगडघो है। नू ग्राग सुण । वात निमडी कठ है ? ऊंट ग्राग चाल्यो तो करमजोग सू नाजम री मोटर रो चक्को फाटघा मिल्यो। सरकारी काम हो । तीनू जणा नाजम न भी ऊंट पर ले लियो। ग्रर नाजम ग्राप मठ सू इक्कीम हो। वै न दो। ग्रामणा र बीच म चढा लियो!'

चौधरण धणी रै मूंड कानी देख लागी ग्रर थोडी त्र बोली कोनी नीसरी। पछ धीरा सी बोली विचारो ऊंट कठ जीव धरगव ? तीन त्र्लात पीठ पर जम बठी!'

खमाणो ग्राग बोल्यो, 'तू ग्रौर सुण। फेर भी ऊंट बठ्यो कोनी ग्रर चालतो ई रयो। ग्राग जातां बो वार्गे हाळो मोटळो नेता मिल्यो। उण री मोटर रो तेल निमडगो ग्रर ग्रागल गाव समा म पूगणो जरूरी हो। तीनू जणा ऊंट पर नदरचा हा तो ग्रोड नतो पण क्या प्राल ? व पिलाण र लारां ऊंट री पीठ पर नन न जमा लियो। डील तो नेत रो भी माडो क्यू हुवतो ?'

चौधरण बोली 'हं भगवान, च्यार दत ऊंट पर चढ बैठ्या ग्रर फेर भी ऊंट उठर खडचो हुयग्यो ? च्यारु वा न गोडी तळ कोनी दाब्या ?'

खमाणो बोल्यो 'तू उतावळ मत कर। ऊंट पूगणो हो ना। बो फेर भी उठग्यो ग्रर ग्राग चाल पग्या। पण त्तर म ई थोडी निमडी है। ग्राग बो पचायत हाळो ग्रामसेवक बैठ्यो हो। ऊंट नेड सी ग्रायो जद बो भी ऊंट री नाड पर चढ बठ्यो। नत रो दूर र साख म माडू लाग हो। ऊंट पर बस या एक ई जगा बाकी बची ही। सो भी भरगी।

चौधरण न भाळ ग्राई ग्रर वा बोली, हरे राम ! इसा दयाहीण मिनख ता कदे सुण्या ई कोनी। राम मारया ऊंट न डोलरहीडो कर लियो। पछ ऊंट न के दोस ? ब न तो टूटणो ई हो !

खमाणो ग्राग री विगत सुणाई–'हाल ताई ऊंट टूट्यो कोनी ग्रर चालतो रयो। हा, धीमी जरूर पटग्या। मेरो ग्रर ऊंट रो पछेता कमती हुवता गयो। मैं दूर सू ग्रो माग दख्यो तो पिछाण कोनी पाया। पण ऊंट ग्ररडावतो जाव हो। मैं ग्रवाज पिछाणी ग्रर उतावळा पग उठाया।

'नैनो मनैं ग्रावतो देख्यो तो बिचारयो कै अब उतरणो पड़मी। बी ऊंट री पीचां पर चाणचुकी लाठी मारी। या लाठी ऊंट पर ग्रर मेर काळजै पर एक साथ पड़ी। ऊंट ग्रावड़यो ग्रर पड़ता ई टूटगो। पांच पारधी उतरया ग्रर नाक जा ऊभा हुया।

मन भोल भाळ ग्रायगी ही पण करू तो के करू ? पाचू ई जोरावर ग्रर राज तज मे सगळ चलतो हाळा। व चुपचाप ग्राग चाल पड़या। बस, पचायत हाळा ग्राममवक पण सुजाया बठ्यो रहगो। मैं पितागण खोल्यो जद ग्राममवक मारी बात मन बताई। बो वा री बाता मुग लीनी ही। ग्रब टूस्योडो ऊंट रोही म पड्यो है ग्रर पाचुवा र जीव न रोव है।'

मारी बिगत सुणर चौधरण एक बर तो बडबडाई पण पछ ग्रांव भर लीनी ग्रर दूसरी ढोड जायर पडगी। इन रमाणा ग्राप री खाट पर पड्यो तारा गिण हा। तळ धरती ऊपर ग्रकास।

सम्पादकजी गे पूरो लख सुणर साथी लोगा टिप्पणी करी-'ग्रो ऊंट कोनी टूट्यो ग्रो तो ग्रापणो दम टूट्यो है। ग्राज भारत री ग्रा ई गत बण रयी है। टूटयोड ऊंट न कोई सभाळ तो देस न सभाळ।

अनोखो अनुभव

आजाद सभा र चौबार म शनिवार री सिज्या भायला री मडळी जुडी। आज व्याख्यान रो दिन हो अर रिछपाळजी मास्टर सभापति रा आसण सुशोभित करबा आज्या हा। सभापतिजी सगळ भायला म साईरा सा ई हा पण ब एक स्कूल म पढाया करता, ई कारण मडळी म बा रो घणु आदर हो।

सभा र नियम मुजब सगळा श्रोता आप आप री मनस्या मुताबिक भाषण र विषय रो नाव लिखर एक एक पर्ची पटी मे गरी अर मास्टर साब सभापति र आसण पर विराजमान हुयर, एक पर्ची काडी। पर्ची पर लिख्योडो हो-'अनोखो अनुभव।' सभापतिजी पर्ची रा आखर सगळ श्रोतावा न दिखाया अर पछ गभीर हुयर बोलणो सरु करयो—

भाई लोगा, म्हारी जिन्दगी रा खारा मीठा अनुभव तो अनेक है पण अनोखो अनुभव तो एक ई है, सो आप ध्यान सू सुणो—

गरमी री मौसम ही। तावडो घणो तेज हो। लूवा चाल री ही। दिन रा दो तीन बज रो वखत हो। म गळी री दाय हेलिया र बीच छाया मे खाट घाल्या आडो हुय रयो हो। नड ई आमण सामी रा कुत्ता खातर पाणी सू भरयोडो कुडो पडयो हो अर इ सरावर र आस पास बारा रा छोटा वडा सगळा कुत्ता बख्या वखत काट हा।

बाम माय कुत्ता रा परवार खासा वडा हा। उण माय छोटा वडा अर बूडा बाळा कइ रूपरगा रा कुत्ता हा। कुडो कन पाणी मिलतो ई कारण बठ घणु सील रवती अर कुत्ता न तो इण बगत इसी ई चीज चाहिज।

म्हारी आख लागी तो कुत्ता म चचा चाली। भावरियो कुतियो आप र दादा (नाना) भूरिये न सिकायत करी, 'आज म्हारा मा (सिपनी) म्हार मूडे री रोटी खोसर खायगी। म तो जासण दादी री रसोई खुली

देखर रोटी ल्यायो हो अर आ डाकण पोळी र आग र बठी मिली । झट म्हारी रोटी खोस लीनी ।'

भूरियो बाल्यो, 'भावरिया, अब तू टाबर कोनी रयो । अब तो रोटी पाणी र मामल म तेरी हुँस्यारी अर तरो जोर ई काम करसी । आपण बचिया री रखोप तो बोबा लव जद ताणी ई करी जाव है ।'

लगतो इ सिपती बाली ई भावरिय न दूध पायर इतरा मडा कर दियो, अब रोटी री छूट किण बात री ? ओ जलम्यो जद मैं जच्चा ही । बास ग छोरा भेळा हुयर मळ रो नग करचो अर घर घर सू चून तेल गुड मागर ल्याया । म्हार खातर सीरा बण्या । छोरा सीर न ठडा करता न मल्यो अर मोको दखर म्हारा धणी (पति) टाकिया आप सगळो सीरो चट करगो । जच्चा गीगला न लिया घूरी म भूखा ई पडी रयो ।'

काळिया कुत्ता सगळा सू बडा हा पण बुढाप कारण सूभना कमती अर कडा म क्यु दरद भी रवतो । बा एक कानी बुगा सू सनायोडो ल्हक ल्हक कर हो । काळिया बोल्या 'आ भावरिया भी कमती कोनी । मनजी पुजारी मठा री हेली सू सदाव्रत री गटी ल्यायर मन गेरी पण ओ टीगर खोसर ल भाग्यो । म आड परवार रो निराणो हुयर भी दोय दिना सू ग्यारस करचा पञ्चो हू ।

भावरिया पडूत्तर दियो, 'तो के बात है ? आज आपण नया नियम बणाल्या । अर आग सू सगळा उण नियमा पर पकाई सू चालता करो, जिण सू कद चचा री बात इ कानी बण ।'

भावरिय रा प्रस्ताव सुणर भूरिय न क्यु भाळ आइ अर बो बाल्यो, 'माड जनम्यो तू नया नियम बणावगियो । बडका न तो कद आ सूभ आई इ कोनी ! नय नय नियमा री जरूरत इ के है ? आपण तो सदा सू बस एक इ नियम है—हाथ आव जिस टुकड पर सतोष करणो अर पूरी ताकत सू गळी री रूखाळी राखणी । कोइ आपरा आदमी रात बिरात गळी म न बड सक ।'

भूरिय री बात न काळिया क्यु आग बधाइ अर खासता सा बाल्या, 'इ र साथ दूजा नियम ओ भी है क पराय बास रा कोई कुत्तो कद गळी म पग न दे पाव । जे ओपरो कुत्ता कद भूल सू भी आपण बास म आ बड तो उण न काढर इ सास लवा ।'

इतर म ई गळी र एक घर मू 'तू तू' री अवाज आई अर छोटा बडा सगळा कुत्ता उण अवाज कानी सपाट भाग्या । वा री भागा दोडी मे मेरी आख खुलगी पण में ई सुपन न भूल्यो कानी अर ई पर सोचतो ई रयो । बगा ई मगळा कुत्ता पाछा बठ इ छाया म आ जम्या ।

मैं कदे काळिये कानी देख हा अर कद भूरिये री बात पर बिचार कर हो । इतर म ई सगळा कुत्ता चाणचुकी गळी र नाक कानी भाज्या । दूसर बास रा एक कुत्ता गळी री सीव मे आ बडचा हा । पछे, अ देस-भगत बठचा क्या रह सक हा ।

राळो सुणर दूसर बास र कुत्ता री भी पूरी फोज आयगी । गळी र नाक पर खासा महाभारत माच्या । काळूसिघ बूडा हुवता थका भी सगळा सू आग हो । उण री सना भी कम कोनी ही । दोनू गळिया री सीव पर आग जाया भूभ हा अर लारन कुत्तिया री डार घूस घूमर जोस दाव ही । वा सू पिछाडी भावरिय सरीसा ल्हाडिया सिपाही जोर जोर सू घू स हा । व भी आप री आई क्सर क्यू राख ?

इस माक मैं कुत्ता री परख करण री सोची अर दूर खडचा ई जार जार सू तू तू करबा लाग्यो । पण बास रा एक भी कुत्तो न मरी बोली पर ध्यान दियो अर न आप र मोरच सू ई हाल्या । ओरा री तो बात ई क नानडिया कुत्तिया भी मेर लालच म कोनी आया । रग है, इ जात र !

थाडी दर पाछ पराय बास रा कुत्ता पग छोड दिया अर आप री सीव म जा बडचा । पछ भी ये सिपाही ठडा कोनी पडचा अर घुसपठिया न ललकारता इ रया । काळिय र कइ घाव लाग चुक्या हा पण बठ घावा र क परवा ही । डाकरा मढ बण्यो खडचो हा ।

जद दूसर बास रा सगळा कुत्ता पर दूर चग्या गया तो काळूसिघ सिरदार री फाज पाछी हली री छाया म आ बठी ।

आ पवाडा मर रूग रूग म बिजळी सी मग्णाय दी । मैं सोधा घरा गया । रसोई म जितरी भी रोटिया टाग्ग र कनेव गातर मल राखी ही, व सगळी उठा ल्यायो अर हली तळ जठ ई नार सिपाहिया न भेट कर दी । म काळिय कन खडचा हूयर ब न एक साबती रोटी खुवाई ।

भाई लोगो, म्हारी जिन्दगी रो ओ अनुभव सब सू अनोखो है।

सभापतिजी रो भाषण समाप्त हुयो तो सगळा साथी गुना सा हुयर बा र मूंडा कानी देख लागा। जद मास्टर साब बोल्या आज देश रो ओ ई हाल है। आपा अवाल समाज रा ओगण तो ले लिया पण उण रा गुण कोनी लिया।'

सभा मे सरणाटो सो छायगो। आज री बैठक म भाषण र बा" न सवाल जबाब हुया अर न चाय पान ई आया। धीरां धीरा सगळा साथी चुपचाप आप आप र जूता म पग घालर घरा चल्या गया।

बगीचै रो कागलो

प्रोफेसर सारदासरण उपाध्याय साठ बरस रा हुयर रिटायर हुया अर पण बरसा पेंसन नई। आखर जद प्रोफेसर साब जमराजा री पेसी म पूग्या तो महामुसी चित्रगुप्त न भारी चक्कर म गेर दिया। उपाध्यायजी अ परो परिचय देवता आपरो धधो साहित्य सेवा बतायो अर महामुसीजी साहित्य सेवियां र सगळ रजिस्टरा मांय सिर मार लियो पण उपाध्यायजी र नाव रो खातो तो मिल्यो ई कोनी।

चित्रगुप्तजी तज पावर र चसमै माय सू और भी घणी तेज नजर प्रोफेसर साब र मूडै पर गेरी अर झुंझळायर बोल्या, 'अर पिरानी तरी साहित्य सेवा रा खुलासो कर जिण सू तेर खात री ठाह पड।'

प्रोफेसर साब कई छोट बड ग्रथा रा नाव बताया अर चित्रगुप्तजी सदभ ग्रथा री अनेक जिल्दा रा पाना पळट्या पण उण ग्रथां रा लखक तो दूसरा ई आदमी हा। बतायोडा ग्रथा माय सू एक रो ई लेखक सारदासरण उपाध्याय कोनी हो तो महामुसीजी न और भी झाळ आई अर बोल्या, पिरानी तू ई दरबार माय भी झूठ बोल है, पछ मिरतु-लोक माय तो न जाणा कितरी च्यार-सौ बीसी करी हुवली? तू जमराज र डड सू डर कोनी?'

अब प्रोफेसर साब च्यारू-कानी नजर गेरी तो जमदूतां री भीड देखर चकराया। मिनखा जूण म इणी गात बा र च्यारुमेर चेलां री भीड रहती पण आ तो दुनिया ई दूसरी है। प्राफेसर साब हाथ जोड'र नरमी सू बोल्या, सरकार, अ सगळा ग्रथ बणायोडा तो मेरा ई है पण दूसर लोगां न मैं भेंट कर दीया। ई कारण बां पर और और लोगा रा नाव ई प्रकाशित हुया अर मैं असली लखक लुकयो ई रह्यो।

जमराज सारी बात आपर सिघासण पर बठ्या चुपचाप सुणै हा। अब ब चुप कोनी रह सक्या अर घणी गभीर बाणी मे बोल्या, 'पिर

ग्रारा ग्रंथ लिख्या ग्रर थारै खुद रै नांव सू छप रै कोनी छपवायो ग्रा बात जहर भेज नहीं है। तू रै रहस्य रो पूरो खुलासो कर नहीं तो ग्रागे ग्र जबरो धणो है।'

ग्रब उपाध्यायजी गोड़ भी घबराया। व हाथ जोड़्या ग्रर थोड़ा सा मुळक्या। पछै नरमी सू बोल्या 'राज नेता घणा रया है। ग्रा गे उन्नति माह मैं ग्रो काम करयो। जिण भांत मायना ग मोठ ग्रापरी सत्ता पर रय उणीज भात गरू री मगता भी चेलां पर रव। ग्रा कोई रहस्य कोनी।'

ग्रब चित्रगुप्तजी न ठाह पडी क ग्रायोड़ो पिरानो ग्रध्यापक रह चुक्यो है तो पछै ग्रध्यापका र रजिस्टर म उण र नाव रो खातो तलास ई लियो। ग्रब चित्रगुप्तजी री ग्राग्या सिमरी ग्रर व एक तार म ई प्रोफेसर साब रो पूरो हिसाब देख लियो।

प्रोफेसर साब हाथ जोड्या खड्या हा। महामुंसीजी बां रो लेखो सार-रूप म महाराजा न यू सुणायो 'राज ई पिरानी रो नाव सारस्वतरग है पण ग्रो काम निकमीसरग रो कर्यो है। ग्रो ग्रापरा ग्रर दूसरा लोगां न भट कोनी करया ग्रा तो जा ग्र नीवजीव सगत वेच्या है। ई जमाना म विस्व लोक म नाना भात रा नया धधा चाल्या है। ग्रा भी एक धधो है—लोग रिपिया लयर ग्रथ सम्पादन कर सोध निबंध ग्रर सोध ग्रथ लिख। निबंधिये न रकम मिल ग्रर सिखावणिये खातर तरक्की ग्रर नौकरी रो मारग खुल। ग्रो पिरानी ग्रा इ धधो चलायो है ग्रर गरू रो सुभाव जमाण है।'

मुंसी रो बयान सुणर प्रोफेसर साब घबराया। व तो मारो काम लुककर ई कर्या पण ग्रठ तो रत्ती रत्ती खबर है! ग्रब काई वण?

जमराजा दात पीसर जोर सू गरज्या 'ग्ररे पिरानी तू सारस्वत प्रदेस माय भी काळो बजार चालू कर्यो! ई पुन्न प्रदेस री भी पवित्रता कोनी रवण दी!!'

जमराजा री गजना सू बिचार प्रोफेसर रा काळजो काप उठ्यो। पण बो सदा सू वाद विवाद माय घणो सिर खपावतो रया हो इ कारण जरा सी हिम्मत करी ग्रर नरमी सू बोल्यो 'सरकार ग्रो काळो बजार मैं नया चालू कोनी करयो। ग्रो तो सदा सू ई चालतो ग्रायो है। ग्रनक राजा महाराजा ग्रर श्रीमत ग्रापरी माया र प्रताप सू वड वड विद्वाना री पगत माय विराज

मान है। कोई महाकवि बण्यो बैठयो है, कोई संगीत शास्त्र रो आचार्य बाजै है अर कोई दर्शन शास्त्र में पारंगत कुहावै है। इं साहित्य सेवियां रा नांव इतिहास ग्रंथां मांय सोप है। पण बां रै पाछै टहुक्योड़ा लेखक तो दूजा ई है। मिरतुलोक में बां रा नांव कोई कोनी जाणै पण आपरे दरबार में तो सारी चीजां चोड़ै है। सरकार अर बजार धनवंतां रो है, गरीबां रो कोनी।'

पिरानी रै मुख सूं इतरी बात सुणी जो जमराजा क्यूं नरम पड़्या अर चित्रगुप्त कानी नेयर बोल्या, 'क्यूं सुणी, पिरानी कै कैवै है? जे आ बात सही है तो पांच दस इस ग्रंथां रै असली अर नकली दोनूं भांत रै लेखकां रा म्हान नांव बता।'

इतरी सुणतां ई प्रोफेसर साब आपरा कान खड़ा कर लिया अर बां नै नई सोध रो मारग खुलतो लाग्यो, जिण सूं बै आगलै जलम में भोत बड़ी रकम कमा सकै हा।

चित्रगुप्त जमराजा नै अरज करी, 'राज ऐसा नांव तो भोत घणा है पण एक पिरानी रै आगै दूजै किणी पिरानी रै करमां रो लेखो सुणावण रो कायदो कोनी। ई कारण एकांत में अरज करी जावली। अै टहुक्योड़ा लेखक साहित्यसेवी कोनी अै तो साहित्यजीवी है। बिचारा पेट रै खातर आ धंधो करयो आप री रचना दूसरां नै देयर संतोस मान्यो।'

इतरी सुणी तो जमराजा क्यूं और भी नरम पड़्या अर प्रोफेसर साब नै भी क्यूं धीरज आयो। अब बां नै आपरै भाग रो फैसलो अनुकूल सो हुवतो लाग्यो।

जमराजा गंभीर हुयर फैसलो सुणायो, 'ओ पिरानी क्यूं बुरो है तो क्यूं भलो भी है। इं नै किणी बगीचै रै बागवान री जूण में दी जावै है।'

जमराजा रै मुख सूं फैसलो सुणतां ई बां रा दूत प्रोफेसर साब कानी आया तो बै हाथ जोड़'र एक अरज महाराजा सूं और करी, सरकार, जे आपरी कृपा हुवै तो मनै बगीचै रो बाग न बणाय'र बगीचै री कोयल बणाय दवो, जिण सूं 'जमराज विजय' नांव रो एक महाकाव्य लिखण री म्हारी मनोकामना पूरी हुय सकै। मैं कोयल री वाणी में राज रो जस गावूं अर दुनिया राज री कीरत बखाणै।'

जमराजा मुळकर जबाब दियो, 'पिराणी, अ मिरतूलोक री बातां अठै मत कर। साहित्यसेवी अर साहित्यजीवी में कोयल अर काग रो अंतर है। श्रो भेद ध्यान राखणो ई पड़सी। दोनु वां रो रंग एक है पण वाणी भेद भोत घणो है। तनै किणी सारदामंदर रे बगीचे रो कागलो बणाय दियो जासी पण आ जूण तो तनै भुगतणी ई पड़सी।'

इतरी कयर जमराजा आपरे आसण सूं उठगा। आज रो दरबार समाप्त हुयो। विचारा प्रोफेसर वां रे मूंडे कानी देखतो ई रह्‌ग्या अर जमदूतां उण नै आ घेरयो।

नौकरा री कारखानो

भगवान री माया भी निराळी ई है। मिनख जिकी चीज जागतो कोनी दख सक, बा सोया पाछै आसानी सू देख लेव। एक बर चाणचुकी म्हारी काया म इसो गुण आयगो क बिना पाख्या ई म आकास मे हस ज्यू उडण लागग्यो अर पाणी ऊपर तिरण लागग्यो। भगवान रो इसो वरदान पायर म्हार मोद रो कोई पार नी रयो।

अब रोक काइ ही ? मै ऊच ऊच परवता री चोटिया पर चढयो, दूर दूर रा जगल देख्या अर समदरा री स्हैल करी। पण मन री इसी मोज म दिसा अर काल रा भेद भूल बठ्यो। मन ओ बरो कोनी रयो क मैं कठ हू, पिरथी पर कुण सी ठोड हू।

आखर म सम दर र किनार एक नय मुलक री धरती पर पग मल्या। ठड ई एक नगरी निजर पडी ता मैं चाव म भर्या बठ जा पूग्यो। ई नगरी रा ठाठ न्यारा ई हा। सडक र किनार एक बड स मकान पर मोट मोट आखरा म मड रयो हो—'सूचना केन्द्र।

मन और कांई चाहिज। परदसा री न्यारी न्यारी अर मात भात री सूचनावा ई तो इ जमान म सब सू ऊचा ग्यान मान्यो गयो है। मं सोच्या, "ई मुलक री सार सूचना जरुर ई सग्रह करनी चाहिज।'

म सूचना केन्द्र माय जा बडग्या। आग एक कमर म मोटा सा अफसर बठ्यो हो। अफसर रा कस सगळा धोळा हा पण तन रमायर बा । सु वार राख्या हा। मे आग री कुरसी पर बठग्या अर बिना पूछे इ म्हार आवण रा मतलब परगट कर दियो - सरकार, आपरो अर मरो दोनुवा रा ई समग बचावण खातर मैं एक अरज करू क मैं समार भर री सूचनावा भळी करण खाद घर सू नीसर्या हू अर सब सू पली आप सू भेट हुई है। आप म्हानै इतरी सी सूचना दवा क ई मुलक री सब सू बडी उपलब्धि काइ है ?"

अफसर म्हार मूंडै कानी ध्यान देयर देख्यो अर वयु मुळक्यो। पछै बो बोल्यो, 'सवाल घणो आछो है। मुलक माय तो अनक छोटी बडी योजनावा चाल रयी है। भात भात रा कारखाना खुल रया है। च्यारू मेर तरक्की ई तरक्की निजर आव है। पण सब सू बडी उपलब्धि किण न बताई जाव ? आ एक विकट समस्या है।"

इतरी सी बात कयर अफसर आम्या सू चसमो उतारयो अर माप र माथ पर हाथ फेर्‌यो। अब उण रा मायो वयु साफ हुयो अर बो बोल्यो 'म्हार ध्यान सू म्हारी सब सू वडी उपलब्धि है—नौकरा रो कारखानो।

म पूरी तरा समझ नी पायो क 'नौकरा रा कारखानो' काई चीज हुव ? म अफसर न पूछ्यो, इ कारखान न नौकर चलायता हुसी ?" जवाब मिल्यो, नौकर तो चलाव इ ज ह पण ई कारखान म त्यार भी नौकर ई ज हुव है। ज्यू दूज कारखाना माय कठ कपडो त्यार हुव, कठ चीणी वण, उणीज भात ई कारखान म नौकर त्यार हुव। इसा छोटा-बडा कारखाना सू देस भर्‌या पडघा ह अर दिन दिन वा री सख्या वधती इ जाव है। मुलक री जनता इ उद्योग न भात पसन्द कर्‌या ह। आप जाणो ई हो, लोकरुचि अर जनसहयोग सू ई विकास रा इतरा बडा काम हुय सक है।"

म्हार माथ म नया च्यानणा दीप्या। आ चीज तो भला भात सू देखवा जोग हे। मैं अफसर न निवदन कर्‌यो, "सरकार मैं आपन वयु तकलीफ दवणी चावू हू। आप री किरपा हुव तो मैं नौकरा र कारखान री वयु मोटेरी सी जाणकारी लवू ? ओ उद्योग तो नया ई है।'

इतरी सुणता ई अफसर री छाती चौडी हुई अर सिर ऊचो उठ्यो। बा घटी बजाई तो तत्काल एक जणा कमर म आयर सलाम करी। अफसर हुकम दियो अ गुणी रा आहर पधार्‌या है। तू इणा र साथ जायर नौकरा र कारखान री पूरी जाणकारी कराय दे।

आप मानो भला मत मानो, म्हार साथ आया जिका आदमी भोत भलो हो। सिगारा न तो म्हार सू पोवण न सिगरट मागी अर न चाय खातर इ उबासी ली। वा मन एक बड मकान म लयगो, जठ भोत कमरा हा। एक-एक कमर म तीस चालीस इडा छोटा बडा छोरा कुरसिया पर बठ्या हा

अर बार आगै टेबला ही। एक मोट्यार पडचो व्याख्यान झाडै हो। आग छोरा री डार बैठी ही। कोइ व्याख्यान सुण हो अर कोई नोट लेव हो। कई धीरा धीरा बात भी कर हा। कई टबिल पर सिर टेक्या आराम भी फरमाव हा।

म्हारो साथी बोल्यो ओ नौकरा र कारखान रो एक नमूनो है। ऐसा छोटा बडा अणगिणत कारखाना मुलक मे छाया पडचा है। कारखाना रा बड दरजा ह, जठ छोटा बडा अनक भात रा नौकर त्यार हुव है। जितरा बरस त्यारी म लाग उतरो ई बडो नौकर बण।"

साथी बोलता ई रयो ता मैं उण न बीच मे टोक अर पूछचो, 'नौकर र कच्च अर पक्क री परख भी हुवती हुसी ? इ परख रो तरीको काई है ? साथी बोल्यो 'हा, ई परख रो उपाय भी कर मेल्यो है। सो भी आपन दिखास्यू। अब दूजी ठाड चालो।"

पछ साथी मन एक दूज मकान माय लेयगा। बठै एक बडो सो हाल' हो। उण हाल माय दोय सौ नडा जुवान कुरसिया पर लाइन' लगाया बठ्या हा अर बार आग भी टेबना मल्याडी ही। हरेक टेबल पर एक कापी' पडी ही। इ हाल न मैं बारणा सू ई देख पायो। भीतर कई जणा कतारा र बीच बीच मे बिना वर्दी र पुलिसमेन ज्यू घूम हा। 'हाल' माय चुप्पी छायाडी ही।

थोडी दर बाद हरक जुवान न एक एक कागद दियो गयो। कागद लिया पाछ जुवाना रा मूडा देखवा लायक रग परगट करया। कई तो तत्काल कापी म लिखणा सरू कर लिया पण कई कागद बाचर धोळा हुयग्या। कई पीळा पडगा अर कइ आपरी टबल ऊपर माथो टेक दियो जाण बा र माथ म चमर चढगी हुव। निगरानी करवा हाळा पूरा चौकसी राख हा क काइ जुवान बाल न पाव अर आप र माय सू ई आप री कापी मे चाव जो कुछ लिख।

म्हारो साथी समझावणी दी क अठ नौकरा रो परख हुय है। पक्क नौकर न सरकार री तरफ सू पट्टो दियो जाव है अर कच्च न पक्को बणावण सारू फर मौको मिल ह। आ परख बरस म एक बर हुव।

आ तमासो खूब रयो। मैं साथी न निवेदन करयो, "आप न घणा तकलीफ हुई। अब म्हान नौकर राखण रो दिखावो भी दिखाय देवो ता म्हारी सूचना पूरी हुव।" साथी बाल्यो, "हा हा, सो भी आप जरूर दखो। म्हान काई तकलीफ है।

साथी चाल पडचो अर मैं उण र लार हुय लियो। साथी मारग बगतो बोल्यो, "ई कारखाना रो ई प्रभाव है क म्हे गावा र अणगिणत लोगा न सहरी बाबू बणाय दिया अर बा र हाथ सू हळियो छुडायर कलम पकडाय दीनी। जिका लोग पहली धूळ मे सिर दिया जमारो पूरो कर देवता बा रा टाबर अब कुर्सिया पर बठ है। अ कारखाना मिनखा रा सस्कार भी सुधार दिया। अब तो बडा बडा गुणी (इजीनियर अर डाक्टर) भी नौकर बणबा ई चाव ह। आ तरक्की कम कोनी। मैं चुपचाप नाड हलावतो साग साग चालतो जाव हो।

अब म्हे एक दूज मकान मे पूग्या। बठ भी कई कमरा हा। एक कमर र बारण पर चिक लगायोडी ही। आग बरामद म सकडा जुवान बण्या ठण्या अर कागद पत्तर लिया उभा हा। कई पोथिया वाच हा अर कई आपस म बतळाव हा। कई दूर लान म खडचा सिगरटा रो धूवो काढ हा।

एक आदमी चिक हाळ कमर सू बार आयर नाव पुकारतो अर उण नाव रा जुवान कमर म जावता। मैं देख्यो क जावत जुवाना र मूड पर उमग लागती पण बो थाडी ई देर पाछ मू डा लटकाया बार आवतो।

म साथी न पूछचो, अठ कितरा जुवान नौकर बणसी? उम्मीदवारा स ता सकडू ऊभा है?' साथी बाल्यो, अठ ता पाच सात जगा ह जिया जाबसी अर बाकी दूज ठौड उम्मीदवार बणसी।

म बाल्यो आ खूब रयो! सकडा जुवाना माय सू पाच सात न नौकर राण पासी? आ ई हाल दूजी ठोड भी हुवतो हुसी? पछ अ कारखाना भला नाकर त्यार करया!'

साथी बाल्यो, आप रा फरमावणो सही ह। म्हार दस रा आ सब सू बडी उपलब्धि ह ता आ ईज म्हारा सब सू बडी समस्या ह। कारखाना

म गत दिन नयो मान त्यार हुवै अर गोदामा भरी जावै है। अब सवाल रयो ई माल री खपत रो। दूजा मुलक ई माल रो आयात भी कोनी कर। आ तो अठ ई खपाणो जावै तो खप। मुलक रा बडा बडा माथा ई सवाल रा हल निकाळबा म लाग रया है। जाणां हां, बेगो ई ई समस्या रो समाधान हाथ म आसी। पछ देस री उन्नति री कोई सीमा ई कोनी रहसी।"

माथी रतनो ई बोल पायो क सडक पर एक भारी भीड़ राळो करती आई। भीड़ जोर सू नारा लगायो— भारत माता की जय'। अर म्हारी आख्या खुलगी।

—

कवितावां विविध भाषावां (अंग्रेजी, हिन्दी उर्दू, राजस्थानी आदि) में ही अर बारी बारी सूं गायर सुणाई गई तो एक रंग बिरंगी कवि-गोस्ठी अथवा महफिल रो रंग जमग्या ।

आ नाटक रो दूजो अंक हो । अब आदरणीय मेहमान जावण रै 'मूड' में आया तो माथुर साब तीजै अंक री प्रस्तावना-स्वरूप आप रै नयै मनसूबै री चर्चा छेड़ दी । इणी बगत भीतर सूं पानां री तस्तरी आई, जिण री बची सिगरेट रा धुंवा छोडता कई मज्जन मन ई मन में महसूस कर रह्या ।

माथुर साब डी लिट खातर एकदम नयो विषय चुण्यो हो—'व्यापार जगत अर साहित्य संसार, एक तुलनात्मक अध्ययन ।' आ विषय शायद संसार भर री किसी भी युनिवर्सिटी में रजिस्टर कोनी करवायो गयो । खास बात आ ही ही कै या एक ई विषय 'कामर्स अर आर्ट्स' दोनूं फकल्टियां में स्वीकार करवायो जा सकै हो । पण माथुर साब रो झुकाव साहित्य कानी विशेष हो ।

साथी लोग तो विषय रो नांव सुणता ई उछळ पड्या अर माथुर साब रै मूंडै कानी टाट बाधली । आज वां न अनुभव हुयो क वां री मण्डळी में एक विलक्षण प्रतिभा भी है जिण री वै हाल ताई परख कोनी कर पाया ।

माथुर साब सूं मित्रां प्रार्थना करी क वै सार रूप में आपरै शोध प्रबन्ध री रूपरेखा सुणावै । दूजा लाग तो आपरै शोध ग्रन्थ री रूपरेखा देखणी चावता पण माथुर साब तो सहकारिता रै सिद्धान्त रा कट्टर समर्थक हा । पछै दुराव छिपाव रो सवाल ई कठै ? वै मेज री दराज माय सूं एक लाम्बो सो कागज काड्यो अर इण भांत रूपरेखा रा एक एक अध्याय बनावणो सरू करयो—

१ युनिवर्सिटी अथवा कालेजा रा नावजादिक प्रोफेसर दूजै लोगां सूं ग्रंथ लिखावै अर आपरै नांव सूं छपाण खातर प्रकाशकां नै देवै, वै साहित्य ससार रा मिल मालिक है ।

२ जिको बड़ा बड आदमियां रा अभिनन्दन ग्रन्थ संपादन करबा री सवैतनिक जिम्मेवारी आपरै ऊपर लेवै, वै साहित्य-संसार रा थोकदार है ।

३ जिका मञान राजनेतावां अर मेठमाहूकारां रा साहित्यिक अभिनन्दन करावे अर गुप्त रूप सूं माथ ई आपरो भी अभिनन्दन करे, वै साहित्य समार रा मैनेजिंग एजेंटस है।

४ जिका 'रिटायर' प्रोफेसर निश्चित रकम लेयर पी-एच डी रा शोध प्रबंध अर एम ए रा डिजर्टेशन' लिखण में छात्र छात्रावां नै स्हारो देवे, वै साहित्य समार रा ठेकेदार है।

५ जिका मरणाम कवि निश्चित किराये पर कवि सम्मेलना में जायर दगल डाटण री उत्तरदायित्व ग्रहण करे वै साहित्य ससार रा थोक व्यापारी है।

६ जिका कवि सेठ साहूकारां अथवा अफसरां रे बंगला में पुत्र जलम अर ब्याह शादी रे आनन्दोत्सवां पर जायर काव्यमय बधाई देवे मंगळ गान करे अर इनाम पावे वे साहित्य समार रा हटुवा (फुटकर दुकानदार) है।

७ जिका सज्जन राष्ट्रीय पर्वां पर सरकारी अफसरां रे आदेस सूं अर वार्षिकोत्सवां पर सस्थावां रे मंत्रियां री आज्ञा सूं कवि सम्मेलन रो सयोजन करण रो जिम्मो लेवे, वे साहित्य समार रा दलाल है।

८ जिका सज्जन लोगां रे घरां अथवा सस्थावां में घूम घूम आपरी अथवा आपर मित्रां री पोथियां वेचे, वे साहित्य ससार रा 'ट्रावलिंग एजेंटस' है।

९ जिका गळराज सार्वजनिक उत्सवां अथवा मेळां में जायर जोर जोर सू काव्यगान करे अर किताबां बेचे वे साहित्य ससार रा ठेलवाळा है।

१० जिका लेखक पत्र पत्रिकावां मे पारिश्रमिक पर भांत भंतीली रचनावां (कविता, कहाणी, लेख आदि) सपादकां री माग मुताबिक भेजता रवे वे साहित्य ससार रा 'जनरल स्टोर' चलावणिया व्यापारी है।

११ जिका राजनेता साहित्य सू बस नाव रो सम्पर्क राखर ई साहित्यिक सस्थावां रा सदस्य अथवा पदाधिकारी बण्या बैठ्या है वे आपर रुतबै मारू साहित्य ससार रा छोटा बडा शेयर होल्डर है।

१२ जिका सज्जन न खुद कवि है अर न लेखक है पण फेर भी साहित्यिक

सम्पादा रा कोषाध्यक्ष बण्या बठ्या है, व साहित्य ससार रा ब्याज कमावणिया बाहरा है।

१३ जिका कवि अथवा लखक विविध प्रयत्ना सू बडा सम्मान पाव, बडा पुरस्कार लेवण म सुफळ हुव अर सास्कृतिक यात्रावा पर विदेस जावण री जोग बठाव, व साहित्य ससार म सोन चादी रा व्यापारी है।

१४ जिका रचनाकार पली नाव कमायो अर पछ आपरी खुद री प्रस तथा प्रकाशन सस्था खोल लीनी, व साहित्य ससार रा गृहउद्योग चालक है।

१५ जिका सज्जन दूजै रचनाकारा न यश-लाभ देयर चीजा त्यार कराव अर पछ आप वा रा सग्राहक बणर प्रकासका सू रायल्टी कमाव व साहित्य ससार म सहकारी-समितिया रा मैनजर' है।

१६ जिका अध्यापक स्कूल-कालजा र विद्यार्थिया री पाठय पुस्तका अर सहायक पोथिया र अलावा दूजो काई चीज कोनी लिख, व साहित्य ससार रा आनडिया मुनीम है।

१७ जिका नया कवि अथवा लखक आपरी रचनावा रा सग्रह आमदनी री उम्मीद म खुद री रकम सू छपाव, व साहित्य ससार रा गटोरिया है।

१८ जिका विद्वान पारिश्रमिक लयर प्रकासका खातर एक भाषा सू दूजी भाषा मे अनुवाद-काय कर, व साहित्य-ससार म ट्रासपोट कम्पनी' रा कामकता है।

१९ जिका विद्वान घणा परिश्रम सू ग्रथ लिख अर पुस्त रूप सू पाखा लयर मोटे आदमिया र नाव र नाव सू छपावण री छूट दव, व साहित्य ससार रा श्रमजीवी मजदूर है।

२० जिका विद्वान रात दिन पुराणा हस्तलिखिया म माथो मारता रव अर सोध काम म ई सार समझ, व साहित्य ससार म खाण मजदूर है।

२१ सरकार द्वारा सचालित अथवा सहायता प्राप्त साहित्यिक सस्थावा व्यापारिया र धमादे खात सू चालण हाळा कुवा, कबूतरखाना अथवा प्याऊ है।

माथुर साब र नय साहित्य री गा वर्गीकरण सूत्री योजना सगळा विद्वान महमाना भात ध्यान सू सुणी अर ई री भात र सरावना करी।

खुसी म चाय री एक दौर और चाल्यो । चाय पीवता माथुर साब सब सज्जनां सू प्रार्थना करी क व कारेगा पर आप आपरा निर्भीक सुभाव जरूर दव जिए सू इ नै अन्तिम रूप दियो जा सक अर आग वठ भी कोई एतराज न ठाड री मिल ।

पछ धन्यवादा री झडी लगावता मारा मेहमान आपर मजबान सू विदा हुई ।

आज डा पुरुषोत्तमराय माथुर एम ए, पी एच डी अनुभव कर हा जाण डा लिंग री हिमरी रो इमरत फळ आ री पकड सू घणो दूर कोनी । अर पछ तो उ आप भी बगीच री कोठी म रवणवाळा साहित्य समार रा एक मोटा सठ इ है ।

❂

आत्म-समीक्षा

बाबू जगदीशनारायण माथुर आप रै मधुर व्यवहार अर चाय-पाणी र पुन परताप सू उर्दू हिन्दी र साहित्य क्षेत्र माय बराबर सभा सम्मेलना म याद करया जावता पण जिण दिन केन्द्रिय अकादमी सू राजस्थानी भाषा न साहित्यिक मान्यता मिली उणी दिन आप निश्चय करया क इ मदान म भा ब आप रा मैन नई तो बाडो जरूर ई बणाव । माथुर साब राजस्थान रा स्वामी कानी हा पण कइ बरसा सू इण प्रदश रा निवासी जरूर हा अर वास गळी र प्रेम अपणेस सू साधारण रूप म राजस्थानी बोलण तथा समभण गी योग्यता भी प्राप्त कर चुक्या हा । सरकारी नौकरी साथ साहित्य न आप साइड बिजिनस' बण्या राख्यो हो अर विविध पत्रा म आप छोटी-मोटी रचनावा चेष्टापूर्वक छपावता ई रवता ।

माथुर साब राजस्थानी लखक बणबा सारू कलम उठाई ता ओ ध्यान जरूर राख्यो क बारी रचना नय अर पुराण दानू भात र पाठका म निभ सक । भला इ बा री पला राजस्थानी रचना महत्वपूर्ण नी मानी जाव पण ज एक बर ब राजस्थानी लखका री पगत म बठगा तो पछ आग चालर विविध उपाया सू ब प्रकाश म आय सक है अर बा रा स्थायी स्थान भी बण सक है ।

माथुर साब रा उपजाउ दिमाग ई गच्चाई न भी तत्काल ई पकड लानी क राजस्थानी माय और विधावा म तो थोडी घणी चीजा जरूर त्यार हो चुकी है पण निब ध री कमी अनेक लोगा न कसकती सी लाग है । इण हालत म आप निबन्ध लिखबा रो ई निश्चय रारयो अर एक ई बठक म बा री कलम साहित्य ससार म नई रचना रा अवतरण कर दियो । साथ ई आ बात भी ध्यान म राखबा जोग है क माथुर साब उर्दू-रचना न हिन्दी अथवा राजस्थानी रूप म बदलता करबा र हुनर म भी कम हुस्यार कोनी हा ।

सूँ कोई पोथी समीक्षा खातर आवै तो वो विदेशी विद्वानों रै वागजाळ में फँसै अथवा भारतीय मनीषियाँ रै नीतिग्रन्थाँ में मोड़मोड़ मित्र धरम नै निभावै ? आ ई कारण है कै कई सुचि-समीक्षक तो पोथी नै पाना पलटै बिना ई प्रोत्साहन-समीक्षा लिखण निरवाळा हुवै अर लेखक भय सूँ सरबथा मुक्त रैवै। आ लेखन काय भी एक प्रकार री आत्म समीक्षा ई है। कदी कै आ समीक्षा आप री कलम सूँ न लिखी जायर किणी दूजो नाम सूँ लिखी गई हुवै।

आज सम्पूरण समाज नै दो वर्गाँ में बाँट दियो गयो है। एक वर्ग है, श्रमजीवी अर दूजो वर्ग है बुद्धिजीवी। अफसर, अध्यापक, लेखक, निदेशक आदि लोग बुद्धिजीवी वर्ग रा मानीता सदस्य है। जद एक हद्‌डो (नाणियो) आप री बुद्धि रै प्रयोग सूँ हळकी सामग्री नै चोखी कीमत पर बेच सकै है तो कवि लेखक किण सूँ कम है कै आप रै बुद्धि कौशल रो प्रयोग क्यूँ नी करै ? पुस्तक-विक्रेता भी तो आप रै प्रकाशनाँ री आप रै ई सूची पत्र में मूँडै दिन सूँ खासा बडाई करै है अर ग्राहकाँ नै लुभावण में राई कसर कोनी राखै।

आज रो युग आत्मविज्ञापन रो युग है। मामूली सी पत्रिका रो भी आप विज्ञापन बाँचो। ये विज्ञापन भी व्यापारिक वस्तुवाँ दाईं बिकरी खातर ई विनिमय-रूप में छाप्या जावै है। ओ ई कारण है कै कवि कोविदाँ नै भी युगधरम निभावणा पड़ै वर्ना वै समय अर समाज सूँ पिछड़ ज्यावै। इसी परिस्थिति में आ एक उत्तम प्रथा चाल पड़ी है कै विविध सम्मेलनाँ में उपस्थित साहित्यकार आगी आगी सूँ आप रा परिचय स्वयं देवै। साहित्यकार अर उण रै साहित्य रा जिका गुण समीक्षकाँ अर पाठकाँ री निजर में कोनी आ सकै वै आत्म परिचय-प्रकाशन में इसा रंग दिखावै कै युग साहित्य रो इतिहासकार आप रै ग्रन्थ खातर एक जगा ई घणखरी सामग्री प्राप्त कर सकै है। जे कोई सरनामू साहित्यकार इस सुअवसर पर हिरदै अर साथ साथ आप रो मूँडो भी पूरी तरां नी खोल सकै तो वानै जो साचो लोग रै हुवै, साहित्य संसार में तो काच रो टुकड़ो ई समझ्या जावै है।

इण प्रसंग में पूज्य बापू रै तीन बान्दराँ री मूळ भावना पर म्हारो ध्यान जावै है। वाँ रा एक बान्दरो किणी री बुराई देख कोनी, दूजो किणी री बुराई सुण कोनी अर तीजो किणी रा बुराई खातर मूँडो खोल कोनी। इणी भाँत म्हारा निबन्ध-नायक ई तीनूँ बान्दराँ रो समन्वित रूप है। दूजै

गन्दां न यूं भी कैयो जा सकै है की बो भलाई न ई देखै है, भलाई नै ई मुगी है अर भलाई र विवरण मातर ई आप रो ग ड्डो खोल है।

जे कोई मोयो लिखारा जाश म आयर दोष-दर्शन र कुमारग पर चाल पड तो निश्चय ई एक क्षेत्र म विमरयोडी वाक-युद्ध री भोमर सू सम्पूर्ण साहित्य ममार म शातिभग रो खतरो पदा हय सक है। आप जाणो ई हो क आज र परमाणु युग म शान्ति सूं बडो दूजो कोई पदारथ कोनी। ई कारण आज आत्म-समीक्षा रा गहज माग न सरश्रेष्ठ है।

नाट —यो लेख छपता ई माथुर साब न धन्यवाद अर बधाई रा अनेक पत्र ता मिल्या इ पण सम्पादकजी री तरफ सू पन्दरा रिपियाँ रो पारिश्रमिक भी प्राप्त हुयो। आ रकम राजस्थानी सुहृद्-गाष्ठी म चाय पान पर खच करी गई जिण माय सम्पादकजी भी घण मान निमन्त्रित हुया। उणी दिन बाबू जगदीशनारायणजी माथुर सवसम्मति सू राजस्थानी रा एक सफल लेखक मान लिया गया।

खेद-दिवस

बाबू जगदीशनारायण माथुर रो मात्र एक नेग्न राजस्थानी भाषा मे प्रकाशित हुयो पण बा री ख्याति इतरी फली क आजाद-सभा री आगली बैठक री अध्यक्षता करबा रो बा न घणा मान सू निमन्त्रण मिल्यो। माथुर साब राजस्थानी ससार री गुण ग्राहकता पर आणद विभोर हुयगा—धन्य है ए राजस्थानी-आळा जिका आपरे लेखका रो इतरो ध्यान राख अर बा रो सम्मान करबा रा मौका ढूंढता ई रव। हिन्दी अर उर्दू म तो आप भोत घणो लिख चुक्या हा पण इसा अवसर एक बर ई कोनी आ पायो।

सनिवार न माथुर साब ठीक वखत पर आजाद सभा र चौबार मे आ पूग्या अर घणा घणा धन्यवाद देयर अर लेयर सभापति र आसण पर विराजमान हुयग्या। माथुर साब अध्यक्षीय-भाषण खातर पूरी त्यारी साथ पधारया हा। ब राजस्थानी भाषा अर साहित्य सू सम्बन्धित जितरा भी ग्रथ मिल सक्या, सगळा बाच चुक्या हा अर बा रा नोट लेयर भाषण री पूरी रिहरसल भी कर लीनी ही।

पण आजाद-सभा र युवका री तो दुनिया ई दूसरी। उठ अध्यक्ष पद सू बस एक ई भाषण करायो जावतो अर उण भाषण रो विषय भी पहली सू निश्चित नी रवतो। प्रत्येक सदस्य आपरी मरजी मुताबिक विषय रो नाव लिखर पटी म एक परची छोडतो अर मनोनीत अध्यक्ष महोदय सगळी परचिया माय सू बिना देखे एक परची काढता। परची पर जिण विषय रो नाव लिख्यो रवतो उणीज विषय पर भाषण देवणो जरूरी हो।

आजाद सभा र विषय निर्वाचन रो विकट नियम सुणर माथुर साब अचभो करयो पण मन री बात मन मे ई राखी अर सगळी परचिया पड्यों पाछ पटी मांय सू मुळकता सा एक कागदी काढी। कागदी पर लिख्यो हो—'खेद दिवस ।

अध्यक्ष महोदय रो कायदो दिमाग चक्कर खायग्यो—हद कर दी आ आजाद-सभा। राजस्थानी माय लिखणो जितरो सोरो है, राजस्थानी ससार म निभणो उतरो ई दोरो है। जे पली ईसो बेरो हुवतो ता माथुर साब कनै अध्यक्षता नामञ्जूर करवा रा लाख बहाना हा। पण अब के बण ? हाथ पत्थर री भारी सिल तळ आयगो। किणी भात ओ तो काढणो ई पडसी। आ भी भगवान भली करी क आज इ सभा रा सगळा सदस्य हाजिर कोनी, नही तो के बेरो ई काठ री पटी माय के गुल खिलतो ?

माथुर साब घणो ई माथो घुमायो—स्वतन्त्रता दिवस, गणतन्त्र दिवस आदि देस भर मे स्कूली टावरा र सहयोग सू हर साल मनाया जाव है। इणी भात बड आदमिया रा जलम दिवस भी सरकारी हुकम सू विविध सस्थावा मे आयोजित कराया जाव है। अनक सस्थावा रा स्थापना दिवस भी जनता र चद सू अथवा सरकारी-सहायता सू मनाया जाव है। जे कोई मानीता-मिनख पार पड तो लोग भेळा हुयर सोग दिवस रो भी दस्तूर कर है। पण ओ खेद दिवस तो कदे सुण्यो इ कोनी। हा किणी भात री छोटी सू छोटी भूल हुया पछ अग्रेजी-सभ्यता र अनुपालन सरूप भारतीय लोग भी बारम्बार मौखिक खेद जरूर परगट कर है। पण खेद रो जलमो तो कठ ई देखण म कोनी आयो।

सभापति री गादी पर चुप बठणा भा वाजिब कोनी। ओ इज्जत रा सवाल हो। आगर माथुर साब जीव मात्र र अधिपति यमराज र आफिस सुपरिटेन्डेट चित्रगुप्तजी न सुमरया अर बा री स्तुति माय हिन्दी उर्दू तथा राजस्थानी तीनू भाषावा म काव्य रचना करवा रा प्रण कर्यो ता माणचुको बा र अन्तर मणा आग ज्ञान गद जात जागी अर व धारा प्रवाह भाषण चालू कर दिया—

आप धन्यवाद आजाद सभा न जिकी विषय चुणवा रो नई विधि ईजाद करी अर सभा विधान न आपरी तरफ सू एक विमल भेंट दी। अनेक धन्यवाद उण सुयोग्य साथी न जिको एकदम नवान पण साथ ई महत्वपूर्ण विषय रा नाव आप री तरफ सू सभा न सुझाया। म्हारा बडा भाग क आप लागा री सेवा मे हाजिर हुवण रा मन ओ मौका मिल्या।

आज र भाषण विषय म एक सा। राजनतिक, आर्थिक, सामाजिक सास्कृतिक अर धार्मिक आदि अनक रग बिरगा भरयो ई पड्या जा सक है। ओ

विषय व्यक्ति सू सम्बंधित है, परवार सू जुड़योड़ो है, समाज रो अंग है अर साथ ई राष्ट्र रो मूळाधार है।

आप जाणो हो क भारत न आजाद हुया शताब्दी रो एक चरण बीत चुक्यो पण म्हे ऊंचा कोनी उठ पाया। भांत भंतीली अनेक योजनावां बणा अर वा पर बगुमार पीसो भी खरच हुय। गरीबी, बेकारी अर भूख मिट ई कोनी। ई रो एक मात्र कारण आबादी री दिन-दूणी बढोतरी है। फेर भी लोग आपर घरा म टाबरा री बग्मगाट रो उच्छब कर। परिवार नियोजन रो महत्वमो घणो ई हाय तोबा मचाव पण उण री कुण सुण? इसी हालत म जरूरत है खेट दिवस री। किणी भी दम्पती र तीसरो टाबर जनमता ई घर म जलम दिवस री पुराणी प्रथा तोड़र मन्ट दिवस मनावणो जरूरी है। ई दिवस पर माता पिता पूर दिन उपवास कर अर बमाता सू माफी माग। घर म अेर नई भावना जाग तो कार बण, देस रो सकट कट, जीवण स्तर ऊंचो उठ, वरना साल भर म आपा नाज पदा करा सवाया अर खावणिया खड्या हुव दूणा तो पेट पूरो किण भांत भर?

इणी भांत आज री शिक्षा पर भी ध्यान देवणो जरूरी है। देस री उन्नति सारू अनेक महाविद्यालय अर विश्वविद्यालय खुल्या। पण मूळ म अ विद्यालय कोनी अ तो नौकर निर्माण रा कारखाना है। नित नया कारखाना खुल है अर भरती हुवणिया री भीड़ बधती ई जाव है। सारो देस पढियोड़ा बेकारां सू ठाडो भरग्यो। फेर भी महाविद्यालया म सालाना-जलसा मनाया जाव है विश्वविद्यालया म कन्वोकेसन रो उपाधि-यन रखायो जाव है। मा प्रथा भी तोड़वा लायक है। अब तो कन्वोकेसन री ठोड़ खेद दिवस मनाया जावण री जरूरत है। इण दिवस पर सगळा अध्यापक, प्रोफेसर अर दूजा अधिकारी उपवास राख अर मनन कर क बां री करणी सू देस रा कितरा गुनर बेकार हुयग्या अथवा हुवण वाळा है। समय अर साधन रा भो दुरुपयोग बरदास्त करण जोग कोनी। इणी सू नाना प्रकार रा उपद्रव उठ है अर तोड़फोड़ री चंडी नाच है। इसी हालत म कानून सू काम कोनी बण। अब तो खेद दिवस रो ई स्हारो है।

देस री बेकारी दूर करवा न अणगिणत नया पोस्ट बणाया गया है। कठ लागा न कुरसी दी गई है तो कठ दो पगा न ठोड़ करी गई है। वेतन, महंगाई अर भत्ता चुकावण खातर नया नया टैक्स लगायर जनता री

जेब खाली करी जाव है। फर भी सरकारी नौकरा रो तो पेट भर ई का ा।
अ परतख अर परोख दोनू भात री आमदनी कर है अर भूखी जनता न
कर भार सू गाव है। परजा आप रो पट काटर सरकारी नौकरा रो चिट्ठो
चुकाव है। पण ई रूप मे आ गाडी कितरै दिना चालसी ? सेवक आपरो
धरम छोडर स्वामी बण बठ्यो—'प्रभु तरु तर कपि डार पर'। दपतरा
म किणी कागज रो विनीत भाव सू लार करो तो क गज आग सरक, वरना
तो बो खानाखामोसी म इसो लुक जाणै समदर मे मछली रळगी हुव।
इणी हालत म प्रत्येक छोट या बड सरकारी अथवा अरधसरकारी दफ्तर माय
३१ माच न भुगताण दिवस न मानर खेद दिवस मनावणो जरूरी है। ई
दिन सगळा कमचारी उपवास राख अर ध्यान कर क भारत री भूखी जनता
आप री थाळी माय सू रोटी काढर बा न पाळया तो इण न पाछो के फळ
मिल्यो ? दीन परजा खुद तकलीफा उठायर बा न सुख सुविधा देई तो उण
रा क कारज सरयो ? ब साल भर पारिश्रमिक लिया अथवा सरकारी खजानै
न लूट्या ?

"इणी भात दुखी भारत र सुखी मिनिस्टरा री लम्बी कतार पर भी
ध्यान जाव है। प्रत्येक चुणाव पाछ मिनिस्टरा री भीड भी वधती गई। अब
तो आ डार सीमा न ई पार कर चुकी है। अ मिनिस्टर बण तो दुखी भारत
रा पण सुख सुविधा लेव यूरोप अमरीका जिमी। बा र खरच पर रोक भी
कुण लगाव ? आप रो हाथ अर जगन्नाथ। आज र वज्ञानिक युग रो एक
भी सुख साधन य बाकी कोनीं छोड। अर मोटो वेतन ऊपर सू न्यारो। जे
बा र भत्ता अर दूज खरचा पर ध्यान देवा तो सिर चक्करा उठ। आछी
आजादी री लूट माची। वतमान भारतीय मिनिस्टरा आग मुगल बादस्यावां
र दीवान-खास म बठणिया दरबारी भी काइ चीज कोनी। अर औ सारा
गरचो उठ है प्रजात त्र र नाव पर—'किमाश्चर्यमत परम्।' इणी हालत
म शपथ दिवस री सालगिरह खेद दिवस र रूप म मनाइ जावणी जरूरी है।
उण दिन माननीय मिनिस्टर साब रो पूरो परवार उपवास राख अर चिन्तन
कर क बा सू दश न लाभ काई है ? व सावजनिक सम्पत्ति अथवा सरकारी
कोष न बढावण म कितरा योगदान कर्‌या है ? व जन-साधारण रो जीवन
स्तर कितरो उठा पाया है ? ब दीन प्रजा नै कद दिया भी है या उण सू
बस दान ई ग्रहण करयो है ?

"सेद दिवस री श्रो साधारण सो दिग्दर्शन कराया गयो है। ई विषय री राष्ट्रव्यापी महत्व है श्रर गाधीवादी भारत मे तो श्रा दिवस राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जावणो जरूरी है। श्राज री विकट परिस्थिति म सेन दिवस सू बडो विषय दूजा कानी। श्राजाद-सभा नै भारत र घर-घर म श्रा श्रपील पुगावणी चाहिज। बस म्हारो तो इतरो ई निवेदन है।"

इतरी कयर श्रध्यक्ष महोदय हाथ जोडया श्रर चुप हुया। सभा म सरणाटो सो छायगो। किणी युवक र नणा म श्राध री लाली ही तो किणी री श्राख्या म करुणा रा पाणी। मन्त्रीजी माथुर साब न मौलिक सूझ खातर घणा घणा धन्यवाद दिया। विशेष भाषण र प्रभाव सू वा र सम्मान म चाय भी मगवाई गइ। इण भात बाबू जगदीशनारायण माथुर श्राजाद-सभा म चौबे सू छब हुयर घरा श्राया।

६

एक अलिखित नाटक री सार-समीक्षा

बाबू जगदीशनारायण माथुर खातर आजाद सभा मे दियोडो अध्यक्षीय भाषण एक वरदान सिद्ध हुया । आगले दिन सभा र कायवाही साथ आपरा पूरो भाषण अखबारा माय छप्या तो माथुर साब री शान रा आकार इतरो बधग्यो क सगळा कागद बाचण मे एक घण्ट सू भी घणो बखत लगावणो पडयो । डाक म आयाडा कइ कागद धन्यवाद सूचक हा तो कई चिट्ठिया म तारीफ सू भरी पूरी व्याख्या ही । अनेक कागदा माय नामी सम्पादका री तरफ सू स्थायी-स्तम्भ खातर नियमित लेख भेजण री भावना भी करी गई ही । एक आध पत्र माय श्रो ठो लामो पारिश्रमिक भेट करवा री चर्चा भी ही ।

माथुर साब रात न सोया एक अनात लेखक र रूप म अर प्रात काल जाग्या एक विख्यात साहित्यकार र रूप मे ।

माथुर साब पूरी डाक बाचर एक करडी सी चाय पीयी । पछै सिगरेट सिलगाइ अर स्थिति पर गम्भीरता सू विचार करवा लाग्या । इतर दिना आप हिन्दी-उर्दू म लिख्यो अर खूब लिख्यो पण क्यु इ अथ कानी निकळयो । राजस्थानी ससार म लेखक री कद्र है । राजस्थानी रा पाठक गुण रा पारखी है । हा, पारिश्रमिक री स्थिति हाल माडी नजर है पण मान बडा म तान ।

माथुर साब मूड मे आयग्या अर भट कलम उठाई । आप तय कर्यो क आज एक दम नई चीज त्यार करी जावै । कइ लोग कव क राजस्थानी लेखक जमानै सू भोत पिछडयोडा है । इस हठधर्मिया रा भरम दूर करणा जरूरी है । हिन्दी मांय अकविता, अकहाणी, असमीक्षा री घुडदौड है । पण राजस्थानी रा घोडो इणा सू भी तीखो रव ता बात बण ।

माथुर साब मनस्या करी क राजस्थानी माय एक इसी साहित्य विधा चलाई जाव, जिकी भारत री तो बात ई क, ससार भर म बठ ई नी मिल

मन । सोचतां सोचतां आखर एक सर्वथा नई विधा रो आकार आप रै दिमाग में आ उतरयो ।

नई विधा रो मूळ आधार हो लेखक अर आलोचक रो एकीकरण । पण या विधा आत्मकथा री लीक पर चालबा वाळी कोनी आत्मसमीक्षा कोनी ही जिण रै आविष्कार रो श्रेय भी माथुर साब नै ई हो ।

नई विधा रो रंग तो एकदम ई न्यारो हो । पुराणी परिपाटी पर चालणिया कई पण्डत आप री रचना री स्वयं ई समीक्षा (अर्थात टीका) लिखता रया है पण माथुर साब तो इसी रचना री समीक्षा चलाई लिखी जो कद किणी री कलम सूं लिखी गई हुवै अर न कठै ई प्रकाशित हुय पाई हुवै ।

माथुर साब रै ध्यान में आ बात ई या चीज भी रयी कै वर्तमान व्यस्तयुग में सगळा ई साहित्य रूप छोटा हुवता जाव है । उपन्यास संकोच सूं लघु उपन्यास बणगो कविता सिकुडर 'मिनी कविता' हुयगी कथा नै लघु कथा रो नाव धारण करणो पडयो अर नाटक हळका हुयर 'एकांकी' रयगो तो पछै समीक्षा भी 'सार समीक्षा' रै नयै नाव सूं लिखी जावणी जरूरी है ।

माथुर साब एक करडी सी चाय और पीयी अर पछै आपरी ईजाद करयोडी नई विधा माय इण भांत पहली चीज साहित्य ससार नै भेंट करी–

'एक अलिखित नाटक री सार-समीक्षा'

'सरकारी अफसर' एक समस्या नाटक है । इण रो एक विशेष पात्र भारतभूषण अग्रवाल इन्कम टैक्स आफिस में बडो बाबू है । आप रा पिता मायाराम रेलवे रा रिटायड स्टेशन-मास्टर है अर मोटी पेसन पाव है । आप री पत्नी प्रभा एम ए (प्रिवियस) सारै दिन बणाव-सिणगार मे लागी रव है । उण री गाणै बजाणै अर सिनेमा देखण में विशेष रुचि है । प्रभा तीन टाबर जणर नचीती हुय चुकी है ।

भारतभूषण रो पडोसी दुरगासहाय पारीक टयूशना री कमाई सूं राजनीति शास्त्र माय एम ए करयोडो पूर परवार रो एक गृहस्थ है । उण री पत्नी म्होरी सारै दिन घर रै धंधै में लागी रव है अर कदै इं सास कोनी मिलै । कठै ई नोकरी न मिलण सूं पछै तो दुरगासहाय एक रिटायड प्रोफेसर री प्रेस में 'प्रूफ रीडर' रो पद प्राप्त कर है अर पंद्र पार सानी पर तो

अखबारां री एजेन्सी लेव है।

प्रभा रो ध्यान एम ए री डिगरी लेयर लेक्चरर बणबा कानी जावै है। दुरगासहाय उण रो ट्यूटर बण है अर बा एम ए पास करतां ई गवनमेन्ट कालेज मे लेक्चरर रो पद प्राप्त कर लेव है।

प्रभा रा भाई साब बाबू देवकीनन्दन गुप्ता सेल्स टैक्स डिपार्टमेन्ट म बडा आफिसर है। आप र पूरो परवार है अर बडी कोठी म रव है। प्रभा दुरगासहाय न आपरा परवार रा घरू ट्यूटर बणायर आप रै मास्टर साब पर किरपा कर है। पण साब म् विचार-वषम्य र कारण ओ काम घण दिना चाल कोनी सक।

दुरगासहाय अखबारी एजेन्सी र साथ सवाददाता रो काम भी सरू कर है अर पछ 'समाजवाद' र नाम सू एक पखवाडियो छापो खुद चालू कर है।

मित्रा री मदद सू 'समाजवाद चाल पड है अर दुरगासहाय नगर मे उपनेता रो दर्जो प्राप्त कर लेव है। पछ हियाव वधायर बो म्युनिसिपल चुणाव मे उम्मीदवार र रूप म खडयो हुय है। मुकाबल म विनोद बाबू है। विनोद बाबू रो बडो बेटो सरकारी अस्पताळ म डाक्टर है अर दूसरो बेटो कारखाना री देखभाळ पर इन्जीनीयर है। सम्पादकजी घण सू घणो जोर लगायर भी आखर चुणाव-सग्राम म मात खाव है।

चुणाव मे दुरगासहाय च्यारू कानी सू हार है। बड आदमियां सू बर बध्यो, पीसा खरच हुया अर अति भागदौड करण सू काया भी जबाब दे दियो।

दुरगासहाय बीमार पड है अर प्रभा आप र मास्टर साब न सहायता देयर खडे पगा कर है।

'समाजवाद' रो प्रकाशन बन्द हुय चुक्यो है। अखबारा री एजेन्सी सू घर रो खरचो कोनी चाल। प्रभा री सिफारिस सू दुरगासहाय न नगर-कांग्रस र दफ्तर माय लिखार (लिपिक) री नौकरी मिल है पण बो पदाधिकारिया री कृपा प्राप्त कोनी कर सक। फर भी दूजो काई ठिकाणो निजर कानी आव, ई कारण बिचारो नीची नाड कर लेव है।

इण प्रतिलिपित नाटक री कथानक बस इतरो ई है। पूरी कथावस्तु मांय सरकारी अफसरां री दबदबो है अर वै राज तथा समाज पर छायोड़ा है। इसी लाग है जाणै भारत री आजादी रो सुख सुवाद बस सरकारी अफसर ई लेवै है अर दूजा लोग तो जिंदगी रो भार ढोवै है। नाटक रो नायक दुरगासहाय इणी लोगां रो प्रतिनिधि है।

भारत जिसै गरीब देश मैं एक अफसर नै मोकळा तरक्की, पेंसन अर भांत-भतीला भत्तां री सुविधावां सूं सम्पन्न रुपाळा पोस्ट मिळै अर दूजा अणगिणत बेकार लोग दरिद्रता सूं दबियोड़ी जिंदगी मैं मुंह ताकता रवै, आ स्थिति समाजवाद रै नारै नै झूठा सिद्ध करै है।

नाटक मैं समस्या तो है पण उण रो कोई समाधान कोनी। नायक नै सफलता कोनी मिलै तो वो चुप बैठ ज्यावै है। इण भांत यो निराशांत नाटक है। 'सरकारी अफसर' देश री एक विकट समस्या है पण निराशा रो वातावरण हितकारी कोनी कयो जा सकै। फेर भी यथार्थ रै चित्रण री दृष्टि सूं या एक सफल रचना है। आशा है लोग ई नाटक सूं प्रेरणा लेसी अर सरकारी अफसर रूपी देशव्यापी समस्या रै समाधान री चेष्टा करसी।

काळू रो अभिनन्दन

सुखदवजी शमा पक्का वमठ हा अर ओ इ कारण है क मिडल फेल हुवण पर भा ब आप र बी ए, बी काम साथिया सू बडी इज्जत बाध राखी ही अर आराम सू घरा बठ्या हा।

शर्मा जी गाधी जयन्ती, नहरू जयन्ती, स्वाधीनता दिवस, गणतन्त्र दिवस आदि जलसा री सावजनिक व्यवस्था माय देस भवा रो काम तो सदीव करता ई पण साग-साग जनसेवा र दूज कामा म भी कम कानी रवता। भावू किणी रो थाण रो काम हुवो, भावू कचेडी रो अर भावू सरकारी महकमै रो, शर्मा जी किणी भाई न नटता कानी अर बलळावता ई उण र साथ हुय लेवता। पोसाक खादी री धारण करता अर वा रो सब सू बडो गुण ओ हो क भावू वा न कोई कुछ भी कह दवो पण शर्मा जी कदे उखडता कोनी अर जरद रो पान चबावता ई रवता।

चुनाव री मोसम म सुखदवजी रात दिन एक कर दवता। व आप कद ई खड्या न हुयर किणी उम्मीदवार रो प्रचार ई करता। पण शर्मा जी प्रचार उणी उम्मीदवार रो करता, जिको सामरथवान हुवतो। बा रो कथन हो क जिको आदमी आपर परवार री इज्जत भली भात कोनी बाध सक, बो विधान सभा अथवा ससद म जायर देस रो काई काम कर सक है?

चुनाव पाछ ठाली टैम माय भी शर्मा जी जन जागरण अर देस री उन्नति रा काई न काई काम बरोबर हाथ माय राखता अर कद ई ठाली कोनी काडता।

एक बर सुखदेवजी र हाथ म न किणी जलस रो त्यारी हो अर न कोई विकास री योजना। ब अठ्या बिचार बाध रया हा क जनसेवो न आ अकमण्यता चोखी कोनी। देस सेवा रो कोई काम जरूर ढूंढणो चाहिज। आज च्यारू मेर लोकसेवा, लोककल्याण, लोकरुचि, लोकजीवण री चर्चा है

ता ब भी इणी भात रा कांई नया प्रयोग कर अर उण री सफलता देख। गहरो ध्यान दियो तो शर्मा जी न लोक साहित्य अर लोककळा रा मदान मूनो दीख्या अर ई काम माय राज सहयोग अर जन सहयोग दोनू ई मिलता लाग्या।

सुखदवजी र माथ म नई योजना बगजा लागी। ब सूक मागजी काम म न पडर योजना न रसभरी करण रा पक्षपाती हा। काम इसा हुव क जलस रा मडाण पूरा मड अर भात बडी भीड भी भेळी हुव। हा, तो किणी लाक कळाकार रा अभिनन्दन करयो जाव।

नगर म च्यारू कानी नजर पसारी ता कइ साहित्य सविया रा मूडा शर्मा जी र आग आया। पण अ साहित्यसवी सुखदवजी र किण काम रा? एक बात जरूर है क या न प्रम सू बडदाया जाव ता ब राजी हुयर जनम न सुधार देव। बा रो सहयाग लेवणो जरूरी हा। ओ काई मुसकल काम कोनी। पण अभिनन्दन खातर कुणम लोक-कळाकार न आग खडयो करयो जाव? कळाकार इसो हुवणो चाहिज, जिका नताजी रा गुण मान अर जनता न भी सुरगो कर देव।

दवलो भाड चाना साग दिखाया करता अर नताजी री बराबर हाजरी भी देवतो। बोली-चाली म भी दवला पूरो चरपरो हो अर रूप बदळण री तो पूछो ई मतना। इस लाक कळाकार रा सम्मान करणो ठीक रहसी। दवल रो लोक अभिनता र रूप म अभिनन्दन समाराह सजायो जा सक है।

थाडी देर नताजी मा र न विश्राम दियो अर फरू अक्कल र घोड न आग चलायो तो दवलो कई फीको लाग्यो अर सुखदव जी री निजर काळू भडभूज पर पडी। दवल भाँड सू काळियो भडभूजा ठीक रहसी। काळियो गाव है अर नाच भी है। ओ लाक गायक अर लाक नतक र साथ लाक साहित्यकार भी है। काळू आप ख्याल बणावता अर आप री मडळी न लयर साल दो साल म एक बर तो लोकमच पर उतरतो ई। ऊमर ढळण पर भी काळू र गळ म पूरो जोर हो। जद काळू ख्याल म नाचता तो कुण कह दव क या गाठा टप्योडो है।

शर्मा जी न आप रा पुराणा दिन याद आया। ब विद्यार्थी जीवण म काळू र भाड मे भोंका देयर कई बर भूगडा धाणी री कलेवा करयोड़ा हा। पछ नेतागिरी रा भिडो उठाया तो पहली पहली रै बरसा मे काळू अ द पदारथ बा न कइ बर भेंट भी करतो ग्यो।

काळू मिनतारू भी पूरा हा। व री दुकान पर सदावरत मे भूगडा धाणी बाटण खातर सेठा री हेली सू चणा अर बाजर री बोरी आवती ई रवती। काळू उण माय सू भूख धाय न दो मुट्ठी धाणी भूगडा देयर आगंळिया धरम लवता अर आप री दुकान पर आवणिय लोगा रो मू डो भी चरचरा करता। बा जास र टाबरा सू 'काळू ताऊ' र बिडद री भेंट लेयर धाणी भूगडा रो परसाद बाटता। पछ काळू री लोकप्रियता म कांई कमी ?

शर्मा जी काळू कळाकार र अभिनन्दन रो निणय लिया अर तत्काल आप री योजना पर जुट पडया।

सब सू पहली शर्मा जी काळू री दुकान पर पूग्या। भडभू जो नताजी न घरा आया दखर उठ्या अर बोरी रो आसण दियो। पछ ख्याल री चर्चा चाली। शर्मा जी काळू न असमान म उठायो। काळू रो नाव छापा म काढी आ पायो हा। अर क ख्याल हुसी जद उण री फोटू छापा म छपसी अर चोम्लळ म नाव उजागर हुसी। इतरी गुणता इ काळ ता आप ई असमाण सू जा अडया। बा शर्मा जी र हुकम न धूजी न दियाड भगवान र बरदान ज्यु सिर माथ पर लिया अर सेठा री बारी माय सू धाणी भूगडा रो पूरो ठठियो आप र उट न दयर शर्मा जी र घरा पुगावण-साम्ह रवाना कर दियो।

पछ शर्मा जी सिरीकिसन मास्टर र घरा आया। मास्टर साब नगर कवि रो सनमान पा राख्या हा। बा री कविता कठ छप कोनी पाई पण ब सठा रा हेलिया म उत्सवा अर ब्याव शादि र मोका पर कई तर कविता सुणायर इनाम पा चुक्या हा। शर्मा जी पहली तो मास्टर साब न बिड़दाया अर बा री कविताबा नोन घ्यार सू सुणबा रो दिखावो करयो, खूब वाहवाही दी। पछ आप रो प्रस्ताव मास्टरसाब र आग मल्यो अर सहयोग री प्रावना करी। शर्मा जी बा रा सुभाव सुण्या अर आप रा सुभाव बा र हिरद म भली भात जमायर मुळकता आप र घरा आयग्या।

शर्मा जी आराम सू घर म बठर नाग-सांस्कृतिक कायक्रम री साम्री

दरवाजा बाँध्या गया। आखर जिक दिन मन्त्री जी पधारया तो इन्तजाम माय कोई कमी कोनी रह पाई।

रयाल रात न नौ बजे मरू हुवण आळा हो पण मन्त्रीजी आराम मू जीम जू ठर याठी सू दस बजे पडाल मे आ पाया। अठ पूरा मेळो मडरयो हो। शर्मा जी आप री पळटण न ई बखत लगावण मारू तारा री पूरी ट्रेनिंग पहली इ दे राखी ही। गगनमण्डल मन्त्री जी र बडप्पण र नारा मू गूज उठ्या। मन्त्रीजी आराम सू साफ पर विराज्या। वा र एक कानी मेठ गोरधनदासजी हा अर दूसरी कानी जनसेवक सुखदेवजी शर्मा।

शर्मा जी माइक पर आया। सेठजी री तरफ सू मन्त्रीजी र स्वागत रो भाषण सुणायो। पछ मोत नरमी अर सनमान सू समारोह रो उद्घाटन करबा सारू मन्त्रीजी सू प्रार्थना करी। जद मन्त्रीजी माइक पर आया तो शर्मा जी री सिखायाडी पळटण फरू नारा लगाया अर भाषण सरू हुयो। भाषण विद्वत्ता सू भर्यो-पूरो पण छोटो सो हो। लोककळा, लोक-साहित्य अर लोक संस्कृति री महिमा जोर-सोर सू बखाणी गई ही। पछ शर्माजी री मन सू काळूरामजी लोककळाकार मन्त्रीजी महोदय र आग आयर हाथ जोड्या तो मन्त्रीजी वा सू घणो हेत जणायर हाथ मिलायो अर सेठजी सू घणमान गळ मे घलायोडी अर पछ उतार अर हाथ म नटकायोडी माळा लोककळाकार र गळ मे मेल दीनी। च्यारू कानी सू इ बखत फोटू लेवण न कमरा रा कइ पळका एक सा ई पड्या। खूब ताळिया बाजी। ई सनमान सू लोक कळाकार ता गद्गद् हुयग्या अर कई बोल भी कोनी पायो। भलो हुयो शर्माजी महाराज रो, जिका आज ओ दिन दिखायो।

रयाल सरू हुयो। पहली काळूरामजी भारतमाता री वदना रा कवित सुणाया, पछ देस री आजादी खातर लड्याड नतावा री बिडदावळी रो एक लम्बो गीत गायो जिण र अन्त म मन्त्रीजी रा नाव भी आयो। ई बखत मास्टर गिरीकिसन री छाती चौडी हुई अर व नड सी बठे शर्माजी कानी देख्यो पण शर्माजी रो ध्यान दूसरी कानी हो। म त्रीजी सेठा न इतरी बार जरूर कयी क इस कळाकारा न प्रोत्साहन मिलणो जरूरी है। पछ दर काई ही? सेठजी री सैन सू शर्माजी माइक पर आया अर वा री तरफ सू काळूरामजी न एक सौ एक रुपया रो पुरस्कार देवण री घोषणा करी। फेरू खूब ताळी बाजी अर मन्त्रीजी ओजू माइक पर पधार्या। व दो शब्द समारोह

री बडाई रै पैसा पर राज काज रै भारी भार रै कारण जठै रा पाणी पेर न दर सबलों पर भेद परगट करता तथा मारी चाहता। पछै सडा नै शर्माजी र ठाकूरामजी न घर नगर री सारी जनता । भोर भाव भगवान स्वर म गीजी मोटर म जा बिराज्या ।

मन्त्रीजी री मोटर चाई गई, समारोह री सारा लोगां ई साथ लेयगी। शिविर में बारा आला भीड छटगी पण ध्यान रा पुराणा रसिया मकान म डटया ई रैया। आज जनदय कवराठी रो ध्यान न्या गर वाटू ई गा इमो माच्यो अर गायो क लोग अचरज म भरग्या-वाह र ठाकू वाह!

और तो और जास रा मधाजर गुणवन्ती भी बारा बजे पछ आप र घरा आ गया। वां रा सुभाव हा क हाथ म लियोड काम नै पूरा करवा म कदै ई देर कोनी करता। ई जोर सांस्कृतिक समारोह रो और तो सगळो काम ओत घणी सफळता सू सम्पन्न व्हगो पण गरव रा पूरा हिसाब तो सरकारी महकमा सू पास करावणा बाकी हा। ई कारण समाजी हिसाब रा सारा कागज पत्तर गा। नवर आगर ल्ति गाव म बठग्या।

एक लोककळा केन्द्र रो उद्घाटण

१ भांड प्रशिक्षण केन्द्र मांय एक शोधविभाग रहसी । ओ विभाग भांड कळा र प्राचीन इतिहास री खोज करसी अर पुराण भाडा रा जीवनचरित्र लिखसी तथा लिखावसी ।

२ दूजो विभाग भाषा शिक्षा रो रहसी । ई विभाग माय विविध प्रदसा, अनेक जातिया अर नाना प्रकार र धधा री सही तथा स्वाभाविक बोली रो पूरो अध्ययन अर अभ्यास करवायो जासी ।

३ तीजो विभाग 'रूप रचना' रो रहसी । ई विभाग माय कला निमित्त धृतबहुवशम् सिद्धा त रा नजर म राखर 'मेकअप मुखमुद्रा वेशपरिवर्तन अर उपकरण सचय आदि री व्यावहारिक ट्रेनिंग दी जासी ।

४ चौथो विभाग सर्वेक्षण सू सम्बन्धित रहसी । ओ विभाग वतमान भांड समुदाय री पूरी सर्वे करसी अर साल्ाना विवरण छपावसी ।

५ पांचवो विभाग प्रकासण रो काम करसी । ई विभाग सू 'भांडकळा' नाम री एक तिमाही पत्रिका प्रकासित हुसी अर सस्था री गति प्रगति रो विवरण छपसी ।

६ छठो विभाग 'प्रदशन रा रहसी । ओ विभाग विशेषज्ञा री देखरेख मांय ट्रेनिंग लवणिये उदीयमान कळाकारा द्वारा लोकरजन खातर मुफ्त प्रदशन री व्यवस्था करसी ।

७ सातवा विभाग 'परीक्षा' रो रहसी । ओ विभाग सालाना परीक्षा री नई रीत सू व्यवस्था करसी । सफल कळाकारा न सर्टिफिकेट देसी अर पुरस्कारा तथा पदविया सू सम्मानित करसी ।

८ आठवा विभाग कळाकारा री सहायता रा काम करसी । ओ विभाग बीमार अर बूढ भाडा न जनसहयोग सू आर्थिक सहायता देसी सीख्याड कळाकारा न सरकारा तथा सरकार सू सहायता प्राप्त सस्थावा म जगा दिरावण रा साधन जुटासी अर वा न ई केन्द्र सस्थान री शाखा उपशाखा खोलण री प्रेरणा देसी ।

इण भात अर्माजी आप र आठ विभागीय अभिनय कळा केन्द्र री माटी सी रूपरेखा सुणायर माननीय मन्त्रीजी महोदय न इ रा उद्घाटण करवा री विनम्र प्राथना करी ।

मत्रीजी उद्घाटण खातर खडया हुया । इणी बीच पती सू छपवायोडै आप रै भाषण री प्रतियां सभा माय खुल हाथा बाट दी गई । मत्रीजी आप रो भाषण बाचर सुणायो—

सज्जना अर देवियो, आज आप लोगा र बीच म आयर म्हान घणो हरख अर उण सू भी घणा गौरव अनुभव हुव । ई इलाक माय जिनरी लोकहितकारिणी सस्थावा ह, उतणी भारत र दूज प्रदेसा री तो बात ई के, बिलायता माय भी शायद ई हुव । अर म बिना सकोच कह सकू हू क ई विकास रो पूरो सवरो आप लोगा री लगन अर प० सुखदेवजी री कायकुशळता न है । (सभा माय जार सू ताळिया रो गडगडाट)

इसी एक भी सस्था कानी जिणरो विकास करण री समाज न जरूरत रैव अर बा आपर निवाचन-इलाक माय न हुव । बस एक कमी आप लोगा साथ म्हार मन म भी कई बरसा सू खटक ही । अर बा कमी ही लोककळा री उन्नति सारू किणी सस्था री । पण आज आप लोगा र सहयोग अर पडत सुखदेवजी री निष्ठा सू ओ दरद भी दूर हुयो । (सभा माय फरू घणा जोर सू ताळिया रो गडगडाट ।)

लोककळाचा अनक भात री है पण उणा माय सब सू प्रमुख 'भाडकळा' है अथवा यू भी कयो जा सक क ब सगळी ई एक कळा माय अन्तरनिहित है । जे कोई मिनख भाडकळा' माय प्रवीणता प्राप्त कर लव तो ब सगळी लोक कळावा री चीज हो, आन भी उण री मुट्ठी म आवता बार कानी लगाव ।

आप जाणो ई हो क ई लोकतत्र र जमान माय तो लोक ई सब सू बडो हे । अर यो कारण है क आज च्यारू मर लोक इ लोक री महिमा सुणी जाव है । लोकमत, लोकवाणी लोकचरचा लोकजागण, लोकनता लोकसवक लोकनिधि, लोकनिमाण, लोकसगीत, लोकसाहित्य, लोकसस्कृति आदि आदि कितराक नाव आपन सुणाऊ ? (सभा मे प्रसपूण हामी री गूज ।)

भाडकळा मार मनारजन री ई चीज कोनी । इ रो महत्व घणो ऊचो अर जड घोन गहरी है । इ कळा रो मूळ आधार रूप—परिवतन है । आज रो राज समाज, धरम करम, उद्योग व्यापार, अर साहित्य सस्कृति रूप परिवतन र आधार पर ई गडया है ।

ओ ससार एक रग र लोगा खातर कोनी । आ दुनिया तो बहुरगा अर बहुरूपिया री है । बोली बदळणो अर भेख पळटणो सुफळता रो रहनी सीढी

अथवा राजमारग है। आप विधान सभावां में जावो सरकारी दफतरां में देखो, सारवजनिक संस्थावां रा मुआयना करो, सगळ रै कळा रा चमतकार मिलसी।

जकडचो पुरजो आप खुद जर अर पूरी मसीन नै भी ठप्प कर देवै। चालतो पुरजो गति, प्रगति, विकास अर प्रकास रो प्रतीक है। उण सूं गीत अर प्रगीत उतपन्न हुवै। आप जाणो ई हो कै चरवेति चरवेति तो उन्नति रो पुराणो महामन्त्र है। (सभा मांय फेरू ताळियां री गडगडाट)

परिवरतन तो समार गो नियम है। जिको मिनख परिवरतन री कळा नै कोनी जाणै बो समार में टिक कोनी सकै। जिको आदमी बखत देखर कोनी बदळै, बो कमबखत है। गरमी आवतां ई आपां स्याळ रा गाभा उतार फैंका अर बरखा रा बादळ देखर छतां त्यार कर लवां। 'देस जिसा भेस' तो आदू गो ओखाणो है। 'बगत देखर काम करणो' नीतिविदां री पुराणी सीख है।

ससार एक नाटक घर है। ई रंगमच पर जिको मिनख आप री भूमिका नै भली भांत निभावै अर पारट नै पूरो उतारै, उण नै वाहवाही मिलै अर दूजा री हूटिंग हुवै। इं कारण जिंदगानी रै नाटक री सुफळता खातर ट्रेनिंग री जरूरत है। म्हांनै पूरो विस्वास है कै भाडकळा—केन्द्र मांय इं ट्रेनिंग री सगाहणा जोग व्यवस्था रसी। इं सूं राज नै लाभ है, समाज नै लाभ है। इं सूं देस री प्रतिभा नै विकास अर राष्ट्र नै प्रकास मिलसी।

म्हारी पूरी चेष्टा रहसी कै इं संस्था नै शिक्षा संस्कृति–विभाग पूरी सहायता देवै। आप लोगां मनै कई कर दिखावण रा मौका दिया, इं विरपा खातर आपनै घणा घणा धन्यवाद देवूं हूं।

माननीय मन्त्रीजी रै ठाट पण मारगरभित भाषण रै बाद समारोह विधान रा दूजा दस्तूर अथात जय वंदि, धन्यवाद–प्रकासन अर नास्ताहार आदि घणै हेत अर उत्साह सागै सम्पन्न हुया।

विदा रै बखत मन्त्रीजी हाथ जोडचा, सिर झुकायो अर मुळकता सा आपरै गळै सूं पुसब हार काढर पडत सुखदेवजी रै गळै में घाल दियो। ओ ई 'भाडकळा केन्द्र' रो असली उद्घाटण हो।

*

सरकारी सूबो

शास्त्रीजी जीमर बठ्या हा क मन मे आई—आज तो गाड बालाजी रा दरसण करा। पछ के देर ही। चिटीयो उठायो अर चाल पड्या।

देव-दरसण करया पछ बावडता शास्त्रीजी बजार रो गलो लिया। इ मारग म च्यानणो हो। रात रा आठ नेडा बज चुक्या हा अर गळिया म कुत्त बिल्ली रो डर हो।

बजार मे आजाद सभा रो चौवारो हो। सनिवार री बठक खातर भायला री मडळी जुडगी ही। शास्त्रीजी मारग मे आवता सभा र मत्री री निजर पडया तो तत्काल मत्री उठर बा री अगवाणी करी, आगा हुया अर घणा मान तथा आग्रह सू पडितजी न सभा र चौवार माय ल गा।

शास्त्रीजी नगर री नई सस्था आजाद सभा रा नाव सुण राख्यो हो अर ब नवयुवक-मडळी रो उत्साह भी सदब बढावता ई रवता पण सभा री बठक म भाग लेवण रा ओ पहला ई मौको हो।

सवसम्मति सू निस्च हुयो क आज री सभा रा अध्यक्ष पूज्य शास्त्रीजी नै इ बणाया जाव। शास्त्रीजी कइ बार साहित्यिक सास्कृतिक सामाजिक धार्मिक आदि अनेक सभावा री अध्यक्षता कर चुक्या हा अर अणगणित भाषण भी द चुक्या हा। इ कारण नवयुवका रा आ नयो तमासो दखण रो मोका छाड कोनी सक्या अर चला रो मन राखण खातर घणा मान सू सभापति री गादी पर बिराजमान हुयग्या।

पण आजाद-सभा रा ओ पक्का नियम हो क भाषण रा विषय पहला सू तका नी रवता अर न विषय रा चुणाव सभापति री इच्छा पर इ छोड्या जावता। विषय रा चुणाव तत्काल सभा म हुवता अर हरेक सदस्य आपरी मरजी मुताबिक विषय रा नाव लिखर पर्ची पटा म छोड दवतो। पछ पटी माय सू सभापतिजी आख मीचर एक परची काढता अर जो भी कोइ विषय उण पर लिख्याडा हुवता उणीज पर भाषण चालू करणा पडतो।

पूज्य शास्त्रीजी तो जलम परची मांडर ई छोटी-बडी सगळी गाता रा फैसला करता आया हा। ब एक परची पर 'हा' अर दूजी परची पर 'ना' लिखर बा न मांड लेवता। पछ सरस्वती माता रो ध्यान धर्‌या बा म मूं एक परची उठावता। जे परची पर 'हा' निकळती ता काम हाथ म लेवता अर जे ना निकळती ता चाव कितरी भी हानि हुवती हुवो, बा काम तो कद करता इ कोनी।

सभा रो अनोखो नियम भी शास्त्रीजी आपरी आन्त र मुताबिक ई देखर घणा राजी हुया अर मुळक्या—चलो भी आपणी लीक पर कई तो चाल है।

पटी म पूरी परचिया पड चुकी तो पछ सभापतिजी आरा भीतर उणा मांय सूं एक कागदा काढी। कागदी पर लिख्योड विषय रो नाव बाच्यो तो शास्त्रीजी र चेहर पर असमजस रो भाव छायग्यो। समस्या न परची दिखाई गई। उण पर लिख्योडो हो—सरकारी सूवो।

शास्त्रीजी भातभतीनी सभाआ म अनेक विषया पर त्यारी अर तुरत-ताता दोनूं वणगटा रा भापण दयर सुणवा वाळा नै सतुष्ट कर चुक्या हा। पण हार म्हाइ ई नवयुवक पाग्गा र आग ! यो विषय कुण सा दिमाग फिर्‌योडो छोरी माडर परची छोड दी ?

बिरामण रो जीव सकट म आयग्यो। घणां ई लाग आपर घर म सूवा पाळै है पण ओ सरकारी सूवा काई हुया ? चिडियाखान म जरूर भात भात रा पखेरू है अर बा म सूबा भी है। ब सगळा सरकारी है। पण बा पर बोल्यो क जाव ? सरकारी सूवो ता भापण रो विषय कोनी, ओ तो एक गोरखधधो है।

सभापतिजी घणो ई माथो घुमाया पण ई पहाळी रा पड परगट नी हुयो तो आखर सरस्वती रो सरणो पकडयो। पना भी जद जद शास्त्रीजी र आग इसा अवसर आया हा ता वरदा र वरदान सूं ई सारा काम पार पडया हा। ब घणी भक्तिभावना सू शारदास्तुति रा सिलोक गाया अर जद सिलोक र चौथे चरण सा मा पातु सरस्वती भगवती नि शेपजाड्यापहा म पूग्या तो चाणचुकी वा र अतर नणा र आग एक दिव्य जात परगट हुई अर व इणी प्रवाह म आपरा भापण सरू कर दिया—

'सरकार चाल स्वारथ पर अर गरु चाल परमारथ पर। जे ई स्वारथ अर परमारथ रा मेळ न मिल–तो पछ राष्ट्र नै डूब्या ई समझो। आज परमारथ कद स पड़यो है अर स्वारथ रो सिक्को चाल है।

मवाल यो उठ है क सूवो सुरग्यानी है अर दूजा न मारग बतावणियो है तो पछ वो साप सरकारी कद स क्यू आव ? ई रा दो कारण है—एक तो सूव री चाल अर दूजो सरकारी जाळ। चाच न चुग्गो चाहिजै अर सरकार न सूवो चाहिजै। जे सूवो जाळ म न पड तो सरकारी चालो चाल कोनी। ई कारण सरकार सूव न पांजर मे ल्यावण री पूरी चेष्टा कर अर पछी न लोभ सूं लालच सूं छळ सू कपट सू किणी भी रूप सू पीजर म पटक्यां पछ ई चन री सास लव।

पीजर रो सब सू बडा ओगण ओ है क ओ पाख्या न जकड दव अर बिचारो पछी उड़णो भूल ज्याव। थाड दिना पछ पछी रो मन मारयो ज्याव अर कद न आ मालिक री किरपा मान बठ। उण री काया म अर हिरद म गुलामी रा रग इतरा गहरा आ उतर क वो 'सरकारी सूवा' बाजवा म गरब अनुभव कर, पराधीनता नै भगवान रो बरदान मान लव। पाप न पुन मानणा मरयोडी आतमा रो सुभाव है।

भाखू काळ म मिनख तडफडायर मरो भाखू बाढ म छटपटायर डूबो सरकारी सूवो तो सरकारी-बोली ई बोल। वो काळ र काप नै कोनी देख, बो तो उस आपर मालक रो मूडो ई देखतो रव। जे मरता मिनख री पीडा उण र हिरद मे आ बड तो बो आपरी आस्था मीच लव। भगवान सू मिल्योडी बाणी रो बरदान सो चुग्ग-साट सरकार र हाथा म सूप चुक्यो। जे सरदार दिन न रात बताव तो सरकारी सूवो दिन मे तारा देखण री गवाही दव।

पुराण दरबारा र गासर म कवि रवता। व राजा री रोटी खावता अर उण रा गीत गावता। बा सामतकाल हो। दुनिया भर म भाखू सामत काल बीत चुक्यो पण भारत म तो बा आज भी वतमान है। इ तथ्य रो प्रमाण सरकारी सूवो है। बा सामत काल री जीवती जागता निसानी है।

पराधीन पछी पीजर रा गुण गायर आकास म उडणिय दूज सूवा न भी पीजर रा आसरा लेवण रा उपदेस दव, स्वाधीन न पराधीन बणावणा

वो जात री मेजा समझ। आज मुलक मे नौकरी रै उम्मीदवारां री समदर उफण्यो आव है, वो इणी रो फळ है।

'सरकार आपर पाल्योड सवै सू आपरो अभिनन्दन करावै अर जम री धजा फरकाव। मुवो जाएँ मैं जीतवा अर सरकार जाणैं मैं जीती। डूब्यो तो देस डूब्यो।

'कदे कद सरकार विद्वाना रै सम्मान रो नाटक रचै अर कवै—'जिण देस म विद्वाना रो सम्मान कोनी वा देस उन्नति कोनी कर सक। पण मूळ मे सरकार विद्वाना रा सम्मान कोनी कर, वा तो सुवा पाळ है।

अग्रेजी जमाने मे भारत पराधीन हो पण उण रो सूवो स्वाधीन हो। स्वाधीन सूवै देस नै भी स्वतन्त्र कर लियो। आज स्वतन्त्र भारत रो सूवो सरकारी है अर स्वाधीन कोनी तो देस साव सात पतन र खाड म नीचो नीचो पडतो जाव है।

'इसी हालत मे जे राष्ट्र न जागणो है, जे जनता न जगावणी है तो सब सू पहली सूव न सरकारी बद सू मुगत करो, उण रा सरकारी सराप उतारो। पछ देखो आतमाराम री इमरत वाणी रो फळ।'

बस इतरो कया अर भावावस म आयर शास्त्रीजी चुप हुयग्या। सुणवा वाळा एक साथ ई गरुजी र मूड कानी देख लागा। वा री आंख्या चिमक ही। चेला र हिरद म नवो च्यानणो हो। सगळा रो या धारणा रयी क आज री बैठक म सभापति रा भाषण नी हुयो पूजनीक गरुजी रो प्रवचन हुयो।

देव गया परदेस

आजाद सभा री शनिवार री बैठक जुड़ी, भायला भेळा हुया सभापति बणावण रा सवाल आगे आयो। ई सभा रा घणखरा सदस्य नवयुवक हा अर एक निश्चित नियम यो भी हो क सभापति पद सूं एक ई भाषण करायो जावतो। पण भाषण रो विषय सभापति पर नी छोड़यो जावतो अर सगळा सदस्य आप-आप री मरजी मुताबिक विषय रा नांव लिखर एक पेटी म परची नाख देवता। पछ चिट्ठी काढर विषय रो निर्धारण हुवतो।

आज री सभा मे सभापति रो चयन भी चिट्ठी काढर ई करयो गयो। चिट्ठी निकळी शर्माजी र नाव री। पण आ चिट्ठी कोई लाटरी री ईनाम कोनी ही, आ तो सभापति री सूझबूझ री परीक्षा ही। ई कारण प्रत्येक सदस्य र मन म अध्यक्षता करवा री इच्छा अर अनिच्छा दोनूं एक साथ ई रवती। फेर भी शर्मा जी मुळकता सा सभापति री गादी पर विराजमान हुयग्या। आपरी बिरादरी म बडो बणवा रा चाव तो सगळा न ई रव।

अब विषय निर्धारण खातर चिट्ठी काढवा रो दूजो दौर चालू हुयो। सगळा सदस्य पेटी माय नियमानुसार परची गेरी अर अंत म अध्यक्षजी आख मीचर एक कागदी काढी। विषय रो नाव पैला ब आप बांच्यो अर पछ दूसरा न दिखायो। कागदी पर लिख्योड़ो हो—'देव गया परदेस।'

शर्माजी पुराणी राजस्थानी रा पण्डित हा अर ब आपर अनेक लेखां म कई बड बड सम्पादकां तथा टीकाकारां रा दांत तोड चुक्या हा। पण आजाद सभा री तो दुनिया ई दूसरी ही। अठ प्राचीन साहित्य सूं कोई खास लगाव कोनी हो। ई सभा रा घणखरा सदस्य नवीनतावादी हा।

शर्माजी र भी नवीनता रो कई रंग लाग चुक्यो हो पण ई नई दुनिया म ब विचरण कोनी कर पाया हा। बस, सभा रा सदस्य ई चायां हा। आज तो या सदस्यतां इज्जत रो सवाल खड्यो कर दियो।

शर्माजी आपरो माथो घणो ई धुमायो पण कई गल्ल पड़ची कोनी, ई विषय री आडी रो फळ हाथ आयो कोनी। आज री अध्यक्षता सम्मान रो कारण न हुयर अपमान रो कारण बणती सी लागी। पण ई अनोखे विषय पर बोलणो मुसकल हो तो ई गादी पर चुपचाप बठ्यो रवण म भी भल र कोनी ही।

शर्माजी मन म निश्चय कर्यो क ओ्म तो इमी जगां आवण म सार कोनी। ब सभा र चौबार री भीता पर निजर गगी। पण भीतां पर किसा भाषण लिख्योडो हो? बठ तो नवीनतम चित्रकळा रा पाच सात चित्राम टंगर्या हा, जिणा रो माटो सो अरथ समभणो भी भाषण र ई विषय सू घणो दोरो हा।

शर्माजी र घर री बठक माय शिव, शारदा, श्रीकृष्ण आदि रा दरसण हा। वा रा मन आजाद सभा सू उठर आप री बठक म जा पूग्यो अर बँ अंतरमणा सू पळ भर दवदरसण माय लीन हुयगा। पछ काई देर ही? शर्माजी न तत्काल भगवान आशुतोष रो वरदान मिल्यो अर ब भाषण चालू कर दिया—

'म्हान ई बात री घणी खुशी है क आजाद सभा रा सदस्य कोरा नवीनतावादी ई कोनी, ब प्राचीनता म भी पूरा रस लेयर उण सू शक्ति-सचय करवा रा ध्यान राख है। ई तथ्य रो पुख्ता प्रमाण आज र विषय रा चुनाव ह। जिण सज्जन र दिमाग माय ओ विषय आया ह, मैं उण न भात भात धन्यवाद देवू हू। भगवान आशुतोष री कृपा सू आज रो विषय म्हार सवथा अनुकूल है। आशा है, आप म्हारी बात ध्यान सू सुणोला।

लारल दिना म एक जणा सभा माय शामिल हुया। बठ आक विद्वाना रा भाषण सुण्या पण एक कळा पारखी रा भाषण म्हान घणो पस द आया। भाषणदाता गम्भीर हुयर कयो—अमरिका तक रा अनेक विदेशी कळा प्रमी म्हार सग्रहालय म आव अर प्राचीन सामग्री रा अध्ययन कर पण भारत रा तो एक ई विद्वान इ उद्देश्य न लेयर म्हार कन कोनी आव। आपा देस री कळा सामग्री री परख कोनी करा अर बा थोड़ दिन परदेसा म चाली जाव ह। अ स्थिति भात चिन्ता अर दुख रा विषय है।

आ मापण सुणर म्हारे मन मे गहरी उदासी छायगी। पण काई इलाज बण ? दुख करया दुख हळका हुया कर है पण म्हारो माथो तो भारी ई रयो अर उण रात नीद भी घणी अडीक करायर ई नेड आई।

नीद माय में सुरग-लोक जाय पूग्यो। पण इ लाक रो तो रग ई न्यारो। काई दिन सुरग रा दवता भारत भूमि माय जलम लेवण न तरसता। पण आज ता ई लोक रा एक ई रवासी भारत म जलम लेवणो तो दूर, उण री दयनीय दशा दखर दूर बठयो ई घबराव है। म्हारा वडो भाग क मैं सदेही सुरग मे आ पूग्यो।

आग सी एक भात बडा भवन खडचो हा। मैं भवन माय गया तो सामें देवराज रो पूरो दरबार लागरयो हो। देवराज इन्द्र सिंघासण पर विराजमान हा। अग्नि, वायु, वरुण, सविता, रुद्र आदि आदि दवा रो प्रत्यक्ष दरसण कर मैं तो मगन हुयग्यो। पिरथी पर चित्तौड र कीरतखम्भ ी देवसभा म देख्योडा मगळा ई देव अठ विराजमान हा। मैं मन म सोच्या ार दाई किणी दिन भारत रा सूत्रधार भी सुरग म आया हुवला जद इ ा व दवी दवा री इसी मूरत्या बणाय सक्या, जाण व जीवती-जागती ई हुव।

दव सभा माय किणी गम्भीर समस्या पर विचार करया जाव हा। मै दूर खडचा सुधमा रा आ महत्वपूर्ण अधिवेशन देखतो रयो पण ारी बाता म्हार पल्ल कोनी पड सकी। कारण हा वा री भापा भि नता। मैं वद कद पडता री सभा म गीज भापा म मगळाचरण सुण चुक्यो हा पण उण मगळाचरण रो अरथ तो व पडत भी शायद ही समभता हुव।

फर भी दव सभा रो सारतत्व मैं जरूर ग्रहण कर लियो। साळा ई दवों न्वता उदास हा जाण किणी भात री विपदा म फसरया हुव। हो सक है, असुरा उठाव करया हुव अर देव न्वता हुव। पण आज तो आपण न्म माग गा इतरा न्म वठ क भारत वीरा रो सेना सुरग ताई जाव अर दवराज रा सकट काट — ते हि नो दिवसा गता।'

दव प्रसग सू म्हार मन म आणद धारा उमडी ही, वा म द पडगो अर मैं भवन सू ार आयग्यो। अब म्हारी नजर भवन र दरवाज पर गई तो उण पर माट मोट आखरा म मडरया हो—'म्यूजियम। अर ओ तो

किन्शी अजायबघर है। म्हान इतरो अचरज अर दुख हुयो क उणी पळ म्हारा मण छाडर नीदडली भाज परी गइ।

"मैं तो सदेही सुरग दसण रो गुमान कर मेल्यो हो पण अब ठाह पगी क आ तो सुपन रा माया ही—"सुपन मे बेटा जण्या भर भर बाट्या थाळ।'

पण म्हारो सुपना सफा इ निरथक नी गयो। बो म्हान बिना पीसा अमरिका री स्हैल कराय दीनी, परभाम मे भारत र देवा री दसा दिखाय दीनी। महाजना र परोजन हुव जद ब आप रै देवा न मिर पर मेलर जोसी र घग सू ल्याया कर है। पण भारत तो आप रै देवा नै रोटी साटै परदेसिया न सूप दीया। ओ है वतमान भारत री देश-भक्ति रो ऊजळो रूप।

अ परदशी भी इसा मायावी है कै भारत मे ता एक भी पुराणी चीज नानी छाडणी चाव। अ पुराणी पोथ्या, जूनी मूरत्या, पुराणा चित्राम आदि सगळी चीजा ढोया जाव है अर भारत न रीतो-थोथो कर है। और तो और, जे इणा रो बस चाल तो अ कुतुबमीनार अर कीरतखम्भ भी उपाडर ले ज्याव, ताजमहल भी चक्ळायर ले उड।

सब सू बडो अचरज ओ है क परदेसी भारत मे नया विचार अर नई जिन्दगी देवण रो पूरो प्रयत्न कर है पण खुद भारत री पुराणी चीजा सू आप र देस न भरता जाव है।

भारत-व्यापी इ क्ळा सकट र कारण री खोज करता म्हानै एक पुराणी बात याद आइ ह—एक देवम दर मे पुजारी पूजा करतो। पुजारी र घर म टाबरी घणी ही अर मन्दर री तनखा थोडी ही। मन्दर मे कई मूरत्या सोन चान्दी री भी ही। धाट सू दब्योडो पुजारी कदे चादी री अर कदे सोन री देव प्रतिमा चुपचाप बेचर काम काढणो सरू कर दियो। इण भात मन्दर री घणखरी मूरत्या उठगी। समय पायर जद मन्दर री सम्भाळ हुई अर पूरी मूरत्या नी मिली ता पुजारी जी पर जोर पडयो। पुजारी माथ-हाळो हो। बो एक अकन उपाई अर पचा मे घण प्रम सू बाल्यो— मानीता पचो, गये दिन मन्दर रा सगळा देई देवता म्हार सुपन आया अर सूचना दीनी क मठ माग भोग कम है। इतर भोग सू म्हारो पेट कोनी भर अर म्हे मठ

कोनी टिक सका । म्हे तो सुरग जावा हा।' इतरी सी बात कयर पराकरा देई-देवता मन्दर सू बार निकळगा। लार थोड़ा सा देव यारो बच्या व भी जावण लाग्या जद मैं बां र आडो फिर्‌यो अर अरज करी–'प्रभु, आप सगळा परदार ई सुरग पधार जावोला पछ म्हारो कुण धणी ? म्हारो रोटी तो आप री मवा सू ई चालै है। का ता आप म्हान भी सपरिवार साथ ई सुरग ल चाला अर का अठ बिराजो, नहीं ता म्हारा टाबर रुळसी। आप म्हारी अरज मानो अर विश्वास राखो, मैं पचा न कयर आप र भोग रा पूरो प्रबन्ध करवाय देस्यू। म्हारी बात वच्याइ देवा र कई जची अर व मन्दर म रुगा। अब म्हारी पचा सू अरज है क जिका देव सुरग गया गो तो गया पण जिका न्या है, वा न ता जावण सू राको। बा र भोग रो पूरो प्रबन्ध करा। नही तो—

धीरा धीरा जावसी स देवा रो साथ।
रहसी देवी काठ री, पत्थर रो पारसनाथ॥

जिण भांत पचाँ न भूख लाग, पुजारी न भूख लाग, उणीज भांत देवा न भी ना भूख लाग है। देव तिरपत ता पुजारी तिरपत अर पुजारा तिरपत तो पच तिरपत। इतरी सुणी ता पचा र ज्ञान उपज्यो अर व केर भाग सा र पुजारीजी री आजीविका रा भी पूरा प्रबन्ध कर न्यिा। उण दिन पाछ एक भी देवता मन्दर छोडर सुरग कोनी गयो अर आप र आसण पर इ विराजमान रया।

आज आपणी कळा सामग्री परदसिया र हाथ बिकर विनायना कानी जाव है। ई रा प्रमुख कारण भारत री देश व्यापी भूख है। तिरधा आदमी कळा री परख कानी कर सक। कळा सामग्री ता सना सू जनर ज्यू राय रा सिणगार अर भूख रा आधार मानी गई है।

भारत सरकार कानून बणाय दियो है क किसी भी भांत री पुराणी कळा सामग्री देस सू बार नी जाण पाव। पण ससार रो ओ सनातन नियम है क समाज री भूख एक ई कानून न कोनी टिकण देव। भूख र आग विचारो कानून तो क धरम इ भाग छूट। भूख सगळ रोगा री जड है। जे म्हे न जीवता राखणो है तो पहला इ जड न काटो पई तो पूरत मन्दर देवा री क बात, ई म्न रा जीवता जागता देव इ कूच कर जावला।"

शर्मांजी रो भाषण मुगार सभा मे मरणाटो सो छापगो । कई बादीला नवयुवक नेम सू भाषण हुया पाछ सवाल उठावता अर हठपूवक विवाद करता पण आज घणाखरा सदस्य पला आप र पेट ऊपरां अर पछै माथ ऊपरां हाथ फेरया अर चुप रयग्या । इण भात सभापतिजी र भाषण नैं आज सगळी सभा री मौन स्वीकृति मिली अर शर्मांजी घणा घणा धन्यवाद लेयर आप र घरा आया ।

गडक-धन

शनिवार नैं आजाद सभा री साप्ताहिक बैठक जुडी । भायला भेळा हुया अर मास्टर हिंगळाजदानजी नै सभापति बणाया । नियमानुसार भाषण र विषय री चिट्ठी काढी गई तो विषय निकळ्यो—'गडक धन ।'

यो काई विषय ? मास्टर साब सदा ई टाबरां री परीक्षा लेवता रया हा पण आज वां री आप री परीक्षा रो दिन आयगो । यो भाषण तो एक प्रकार री मौखिक परीक्षा ही अर साथ इ भरी सभा म इज्जत रो सवाल भी हो । मास्टर साब मन म सोच्यो क आजाद-सभा री अध्यक्षता करणी तो जाणबूझर इक आफत म फसणो है ।

आखर मास्टर साब हिंगळाज माता रो ध्यान कर्यो । देवी आप र नाम री लाज राखण सारू सरस्वती-पुत्र पर महर करी । पछ तो मास्टर साब क्यु मुळक्या अर इण भांत बोलणो सरू कर दियो—

गोधन गजधन वाजिधन और रतनधन खान ।
जब आवै सन्तोषधन, सब धन धूरि समान ।।

प्राचीन भारत म मुनि महात्मावां रो धन संतोष हो । राजावां रो धन सोनो चांदी अर रतन हा । पण साधारण जनता रो धन तो उण रा पशु ईज हा । इण पशुवां मांय प्रमुखता गायां री ही । यो ई कारण है क प्राचीन साहित्य म गोधन री चर्चा घणा सू घणी मिल है ।

राजस्थान री तो आज भी या ई स्थिति है । अठ गावां म पशुवां रो नाव ई धन अथवा वित्त है । किसान री गायां भैस्यां, ऊंट सांडघां, भेड बकर्यां ई उण रो धन है, उण रो वित्त है । पण राजस्थानी वनि तो और भी आगै जा पूग्यो । एक लोक-प्रचलित सुभाषित सुणो—

साहू-मास, गडक धन, रोटी परलो घर ।
बो मल, वो गिर पडै, अत बर वो बैर ।।

अब कल्पना करो—जे आपणा देश मांय भी इणी ज भांत गांव गांव कुत्तां री डार फिरै तो किसीक अनाग्गी बात बणै ? आप स्वीकार करोला देश म इतरा कुत्ता रह्या तो मिनखां री दुरगत ई हुव-न खावण न रोटी न अर न रवण न झूपडी।

पण मैं पूछूं हूं क देश री या दशा आज नीं है ? के लोग आप रै पेट पूरो भाग्यो द पाव है ? के वां न सिर लूकोवण न आसरा है ?"

इतरी कयर मास्टर साब श्रोतावां रै मूडै कानी देख्यो तो एक साथै कई जणा बोल उठ्या—'कोनी कोनी कोनी।' अब सभापतिजी आग रगणो चालू कर्यो—

ता आप पक्की मानो क मुलक मांय गडकां री फौज फिरै है अर आपां ना थका भी उण न अणदेखी कर राखी है।

आज देश म इणा अणगिणत मिनख है, जिका न किणी भांत रो शान्त कर अर न किणी रूप म रूण र विकास मांय ई याग देव। ये चालो व है चोप्पो पर है।

यो भारत रा गडक-धन है। अर किणी भांत रै धन रो बधवो भावू हुवो पण यो धन तो दस म खूब ई बधगो अर बध्या ई जाव है।'

मास्टर सार रो भाषण समाप्त हुया तो एक साथ ई इसी चलचल नी क सब आजाद सभा री अनक स्वतन्त्र सभावां हुयगी। सगळा सदस्य आ जोश म हा। पण ई नवयुवकां र जवानी शांति ई तो करणी ही, पछ बाद म कमी क्यू राखता ?

राजस्थान रो साहित्यकार कुरण ?

आजाद सभा म आज विचार गोष्ठी री वारी ही। विचारणीय वि
हो—'राजस्थान रा साहित्यकार कुरण ?' भवानीशंकर जी उपाध्याय सभा
रो पद ग्रहण करयो।

गोष्ठी चालू हुवण सू पहली सभापति जी सदस्या न सतत र।
क प्रत्येक वक्ता इ बात न खास तौर सू ध्यान म राख क विचार ए
सार रूप म परगट करया जाव अर दळ्योड न आर न दळया जाव।

सब सू पहली विनोद शर्मा आपरा विचार इण भात परगट कर्य

'राजस्थान र साहित्य री परम्परा भोत घणी पुराणी है अर ई
रो साहित्य अति विशाल ह। अठ सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श, मरुभाषा, ि
अर खडी बोली म अनेक कवि काविदा साहित्य निर्माण रो काम कर्या
य सगळा ई राजस्थान रा साहित्यकार है। मर विचार सू जा भी
राजस्थान रा रवासी साहित्य रचना करी है, भाव बा किणी भी भाषा
हुवो, वो राजस्थान रा साहित्यकार है।'

पछ सुरेश जी री वारी आई। आप रा विचार इण भात रया–

पूर्व वक्ता रा विचार सही है। पण बा र वक्तव्य माय स्पष्टो
कम है। अनेक मुनि महाराज राजस्थान माय ग्र थ रचना करी है
गुजरात माय भी जा पूग्या। बठ भी व साहित्य निर्माण कर्या। उणा
किण प्रदेश रा साहित्यकार मान्या जासी ? इणी भात राजस्थान रा
रवासी घणा दिना सू महाराष्ट्र मध्यप्रदेश बिहार बगाल आदि प्र
रव है अर उण प्रदेशा री भाषावा म आपरी घणी रचनावा भी करी ह
लोग राजस्थान रा साहित्यकार मान्या जासी क कोनी मान्या जावै
सवाल भी विचार करण जोग है। मर ध्यान सू भी राजस्था
साहित्यकार मान्या जाव।

रो स्हारो लिया बिना लोकजीवरण रो उत्थान हुय कोनी सकै । ई सम्बन्ध म रूस अर जापान रा उदाहरण आपरण आग है । राजस्थान र पिछडेपरण रो एकमात्र कारण यो ई है कै अठ लोकभाषा रा आदर कोनी । बिना राजस्थानी भाषा रै राजस्थान रो सही अर स्वाभाविक चित्रण बरण ई कोनी सक ।'

यो वक्तव्य सुणता इ कमल माथुर बोलरण री इजाजत लेई अर पछ पूर जोश मे आयर आपरा विचार परगट करया—

'आज रा मिनख चद्रमा पर चरण टक चुक्या है अर आपा राजस्थान अर राजस्थानी न लिया बठ्या हा । या विज्ञान रो युग ह । आज र साहित्य म युगबोध ल्यावणो जरूरी है । दुनिया रा लाग घणा आग बढ चुक्या है अर भारत वा सू दोय सौ बरस लारै पड्यो है। ये छोटा छोटा दायरा किरण काम रा? आज र मिनख न देखा, मिनख री प्रगति पर ध्यान दवा अर साहित्य र क्षेत्र म विकसित देशा सू कदम मिलायर आग चालो तो भलाई है। पुराण बिचारा नै माथ मे लाद्या राखण सू नया जीवरण कोनी जीयो जा सक । नई कविता, नई कहाणी रो रहस्य यो ई है । या चीज सब सू ज्यादा ध्यान देवण जाग है ।'

अब रामनाथ दिवाकर उठ्या अर इरण भात बाल्या—

'युगबोध री बात सवा सोळा आना सही है पण युगबोध री पिछाण उचित रूप सू हुवणी जरूरी है । आज राजस्थान री पीडित जनता न छोडर अठ रो कोई साहित्यकार वियतनाम री समस्या पर नया उपन्यास प्रस्तुत कर तो उरण सू किसो काम पार पड । आज ई धरती र बेकारा री भीड न भुलायर कोई लेखक चेकास्लोवाकिया पर हुयेड रूसी हमल पर नई कहाणी लिख तो उण सू किसो कारज सध ? राजस्थान रो साहित्यकार तो बो ई है जिको राजस्थान री पीड न पिछाण इरण प्रदश री जनता न जगाव अर आप र पगा पर खडी कर । या बात मान लीनी क आपा अनक देशा सू दोय सौ बरस लार हा । पण समाज सू दोय सौ कोस आग बढचाड साहित्यकार री बात उरण रा पिछडघोडा साथी कया सुण पासी ? आज राजस्थान र साहित्यकार रा इण धरती री जनता सू सम्पर्क टूटतो सो लाग है । आज साधारण जनता न उण री बात समझ अर न उण री भाषा । पछ उरण री रचना रो राजस्थान खातर उपयोग ई काई है ?'

यो भाषण सुनता इ पाच सात जणा बोलरण री बारी लवरण खातर एक साथ इ हाथ उठाया तो सभापतिजी घडी कानी निजर गरी—ग्यारा बज